

उद्यमो भैरवः

SATISAR



THE CULTURAL HERITAGE

नौदेहेन सती देवी भूमिर्भवति पार्थिव। तस्मातु भूमौ सरस्तु विमलोदकम्। षड्योजनायतं रम्यं तदर्धेन च विस्तृतम्। सतीदेशमिति ख्यातं देवाक्रीडं मनोहरम्।

The goddess SATI, with the body in the form of the boat, becomes the earth and on that earth comes into being a lake of clear water, knwon as SATIDESA.....A Sporting place of Gods.

कः प्रजापतिरुद्दिष्टः कश्यपश्च प्रजापतिः। तेनेदं निर्मितं देशं कश्मीराख्यं भविष्यति।।

Prajapati is called Ka, Kashyapa is also a Prajapati, Built by him, This place will be called "KASHMIR"

A Cultural Window of Satisar Foundation

SAPTRISHI-5085 KASHMIRI PANDIT VISTHAPAN-20 VIKRAMI-2066

पर्व

माघ मास महिमा

FESTIVALS

CHAPTER : MAAG MAAS MAHIMA



Five Panchayatan Gods

Photo Curtsey : S. Munshi

माघ मास महिमा

हार, व्यहक, कार्तिक व माघ

यह सारे मास चर्तुमास कहलाये जाते हे

यत्र कुत्रा अपि व माधे प्रयाग स्मरण अन्वितः

करोति मज्जनं तीर्थ स लभेत गंगा मज्जनम्,

तथा समुद्रे अप्यति प्रशस्तम्।

विश्व में जहाँ कही भी जो मनुष्य माध महीने में प्रयाग इत्यादि तीर्थो का नाम लेते हुए स्नान करता है वह गंगा के माज्जन का फल प्राप्त करता है और वह स्नान अति श्रेष्ट है।

न वह्निं सेवयेत्सनातो ह्यस्नातोऽपि वरानने। होमार्थ सेवये वह्निं शीतार्थं न कदाचन।।

हें वरानने – स्नान किया हो अथवा न किया हो माध मास में अग्नि का सेवन न करे
होम आदि के लिए अग्नि का सेवन करे किंतु शीत हटाने के लिए नहीं करे।

कशमीरी पंडितो में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध हे **"येम कोर माघ स्नान, त्येम पूज सालिग्राम"** अर्थात जिसने माघ में स्नान किया उसने सालिग्राम (विष्णु) पूजन कर लिया।

इस मास में प्रत्येक गाँव तथा शहरो में भक्तजन अपने–अपने नागबल देवीबलों,, मन्दिरों में जाकर स्नान, पूजन इत्यादि करके माघ का सम्पूर्ण लाभ उठाते है माघ महीने में सभी घरों में शाम की सन्ध्या के अवसर पर भजन कीतनो का आयोजन होता है इस मास में कई पवित्र पर्व आते है जो धीरे–धीरे कश्मीरी पंडितों की पर्व सूची से कालन्तर में छूट न जाये इसीलिए इनके प्रति पुनः जागृति के हेतु सतीसर परिवार ने इस पुस्तक में पर्वो के ज्ञान हेतु पाठ्य क्रमों का मुद्रन किया है ताकि सभी भक्त इनसे पर्वो की आत्मा का बोध प्राप्त कर सकें।

प्रथम पर्व तो सम्पूर्ण माध मास ही है। सभी भक्त जन जागकर स्नान करके अपने नियमासार ब्रहम्मर्हूत में पूजन करें तथा सायं काल में भजन–किर्तिन करें।

व्रतै दानैस्तपोभिश्च न तथा प्रीयते हरिः। माधमज्जनमात्रेण तथा प्रीणाति केशवः।।

प्रीतये वासुदेवस्य सर्वपापानुत्तये । माघस्नानं प्रकुर्वीत स्वर्गलाभाय मानवः।।

माघ मास में पृथ्वी के उस स्थान पर सारे जल स्रोत उत्यन्त पवित्र हो जाते है तथा गङगाजल के समान होते है माता पावर्ती ने भगवान शंकर को प्राप्त करने हेतु माघ मास में ठण्डे जल में तप किया था प्रभु को प्रसन्न किया था, इस मास में कई पवित्र व्रतों व उपवासों का निवास रहता है। आईये इस माघ मास में सभी भक्त आश्रमो मन्दिरों अथवा अपने घरों में सायं काल (संध्या) में कुछ समय के लिए सपरिवार भजन कीतिन का आयोजन करे।

माघ मास में दैनिक "साय" पुजा विधि

माध मास के सायं काल में यदि सभी भक्त जन अपने–अपने निवास, स्थानो, मंदिरों अथवा आश्रमों में केवल कुछ पलो में ही समस्त देव–देवीयों की कृपा प्राप्त करें

1) प्रथम आसन ग्रहन करे। आसन बहुत ही सुखद होना चाहिये
2) शुक्लम----------
3) गुरुवे नमः---------- आदिसिद्धेभ्यो
4) महिमना पार
5) अच्युतम---------
6) दुंगा पाठ-------- लीलारब्ध---------
7) हनुमान,र्सूय-----------

क्षमा प्रांथना

1. From Maga Masa the Uttamyans starts Gods are awake during the day time and accept the offerings.
2. Sun being in the Magha Nakshatra Is the cause for the name of this month as Magha
3. Relevance of food in different sheats (पंच प्राण- vital airs)
4. This should be kept in mind that during the hours of fasting we take 5 fist full of cooked rice for the energizing the Vital Prans (Sheats).We offer the food to Vital energies(Prans) in shape of Ahuties . During the process our mouth acts like the Hawan Kund and these five prans Sustain the world as under:-

प्रणाय स्वाहा→ नेत्रन्द्रिय की तृप्ति→ फिर र्सूय की तृप्ति→ आगे घ्यलोक की तृप्ति→ जिस किसी पर भी घ्यलोक व आदित्य आधिष्टित है→ वह इस ब्रह्मतेज द्वारा तृप्ति होता है

व्यानाय स्वाहा→ व्यान तृप्ति होता है→ त्रोत्रोन्द्रिय की तृप्ति→ चंद्रमा की तृप्ति→ दिशायें जिस पर दिशायें आधिष्ट्त हो→ वह भोक्ता प्रजा पशु→ अन्नाधय तेज ओर ब्रह्मतेज द्वारा तृप्ति होता है।

अपानाय स्वाहा→ वागिन्द्रिय→ अग्नि→ पृथ्वी→ जिस पर पृथ्वी और अगिन (स्वाभिमानपन) आधिष्टित है व तृप्त होता है→ पुजा, पशु, अन्नाद्य, तेज व ब्रह्मतेज,

समानाय स्वाहा→ मन तृप्ति→ पर्जन्य→ विद्युत→ विद्युत व र्पयजन्य अधिष्टित व तृप्ति होता है। भोकता प्रजा→ पशु→ अनघ, तेज व ब्रह्मतेज के द्वारा तृप्ति

उदानाय स्वाहा→ त्वचा→ वायु→ आकाश→ जिस पर वायु/आकाश (स्वभिमान से) आधिष्टित है वह तृप्ति होता→ भोक्ता प्रजा, पशु, अन्नाद्य, तेज व ब्रह्मतेज द्वारा तृप्ति होता है

षट्तिला एकादशी – (10th Jan)

माघं मास के कृष्णपक्ष की एकादशी "षट्तिला एकादशी" के नाम से जानी जाती है। इस दिन छः प्रकार के तिलों का व्यवहार किया जाता है। इस लिए इसे "षटतिला" कहा गया है।

तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकीं।
तिलभुक तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशनाः।।

इस दिनः–

(क) तिलो क`जल से स्नान (ख) तिल का उबटन (ग) तिल से हवन
(घ) तिल मिलं जल का पान (ड.) तिल का भोजन (च) तिल का दान

इस व्रत के धारण से पितृो की तृप्ति, शारीरिक व्याधियों का नाश, तथा भगवान श्रीकष्ण की अनुकम्पा प्राप्त होती है।

शिव चर्तुदशी

1. शिव चर्तुदशी **दशमी, एकादशी व द्वादशी** का व्रत है।

यह व्रत तीन दिनों का धारण किया जाता है इसी को कश्मीरी पंडितों में **महाशिवरात्रि** का पर्व कहा गया है।

यदि पूरे मास में एक समय का भोजन अथवा शीतल जल से स्नान करने में असमर्थता हो तो इन तीन दिन अवश्य करना चाहिए।

'मास पर्यन्तं स्नानसम्भवे तु त्र्यहमेकाहं वा स्नायात'"

महाशिवरात्रि के तीन दिन होते है।

1. दशमी – दहम 2. एकादशी – काह 3. द्वादशी – बाह

इन तीन दिनों को कशमीरी भाषा में "शिवचर्तुदशी हुॅन्द **दहम, काह त बाह** कहते हे।

इसमें चर्तुदशी के दिन बाह (द्वादशी) होती है तथा इससे पहले दो दिन दहम तथा काह होती है।

द्वादशी का दिन चाहे जन्म के समय हो या प्रयाण के बाद हो एक ऐसा सूक्ष्म विज्ञान है कि हमारे साँसे तक द्वादशाँत यानि (12 units) तक ही आती/जाती है।

"दशमे दिनमारम्भे रात्रि नृत्यक्रीडा ....

यह सारा ब्रहमाण्ड एक सपन्दन के द्वारा क्रीडनशीन रहता है उत्पति हो अथवा लय जगत का सम्पूर्ण कार्य एक लय में है और इस संपदन अथवा लय का मूल कारण भगवान शिव ही है वह सबसे बडे नृतक है इसलिए **नटराज** है।

दशमी (**दहम**) के दिन शिव ने इस मूल संपदन (नृत्य) को आरम्भ किया था तथा एकादशी (काह) रात्रि को पार करके द्वादशी (बाह) की सायं वेला में विश्राम कर इस संपदन को पूर्ण स्थिर कर लिया।

कशमीरी पंडितो में विषेशकर माधमास की शिवचर्तुदशी ही महाशिवरात्रि कहलाती है तथा फाल्गुन मास की शिवरात्रि को हररात्रि अर्थात् "हैरत कहते है।

इन दोनो में कई अंतर है जैसे

शिवचर्तुदशी	हररात्रि (हैरत)
1. भाघ मास मे होती है।	1. फाल्गुन मास में होती है।
2. शिव चर्तुदशी हर मास में होती है।	2. पहले 40 दिनों का जो अब केवल 15 दिनों का होता है तथा वर्ष में एक बार मनाया जाता है।
3. इसमें पूर्ण उपवास रखा जाता है।	3. इसमें वटुक इत्यादि को भोग लगाने तक ही उपवास रखते है।
4. इन दिनों मकर में सूर्य की प्रवष्टि होती है।	4. इन दिनों कुम्भ में सूर्य होता है इस लिए कुम्भ (नोट्) भरते है।
5 इसको शिवरात्रि कहते है	5. इसको भैरव याग हर रात्रि भी कहते है।

शिवचर्तुदशी का पर्व चर्तुदशी से दो दिन पहले आरम्भ करें इस दिन एक समय भोजन करे जैसे हम अष्टमी के दिन करते है **इसको दशमी कहत** है अगले दिन **एकादशी** का व्रत धारण करे इसमे चावल इत्यादि का सेवन न करें इसके अगले दिन अर्थात् **शिवचर्तुदशी** को पुनः एक समय भोजन करे इस बीच माध स्नान तथा पूजन इत्यादि मे ही लगे रहे इस प्रकार इन तीन दिनों में योगी सम्पूर्ण वर्ष के पूजन का फल प्राप्त करते है।

Global Workshop on Biodance of Shiva

आईये इस महाशिवरात्रि की सायं काल में सभी भक्त जन विशव में जहाँ भी कहीं हो तो शिव की संपदन शक्ति का अनुभव व अनुकंपा प्राप्त करने के लिए एक मूल मन्त्र का जाप 108 बार करें

जप समय सायं – 5.30 पर

दिनांक 14th Jan-2010

(संक्लप) अस्य श्री मृत्यंजय मन्त्रस्य महाचमसकलोह ऋषिः शक्ति गायेत्रं छन्दः, मृत्युंजय भट्टारकोदे, ओं बीजं, ज शक्ति, सः कीलकं।

चर्न्द्रकाग्नि विलोचनं स्मितमुखं पध्मद्वायान्तः स्थितं
मुद्रापाश सुधाज्ञ सूत्र विलसत्पाणिं हिमाँशु प्रभम्।
कोटीरेन्दु गलत्सुधाप्लुततनुं हारादि भूषोज्जवलं।
कान्तया विश्व मोहनं पशुपतिं मुत्युंञ्जयं भावये।।

गायत्रीः– तत् पुरूषाय विदमहि महादेवाय धीमहि तन्नो मृत्यञ्जयः प्रचोदयात्–(3 बार)

"उों जुं सः हंसः मां पालय पालय सो हंसः जुं उों" : 108 बार।

विराज राज पुत्रारि तत नाम चर्तुाक्षरं पुर्वार्ध तव शत्रुनां परार्ध मम विष्मणे।

मृत्युंजय मन्त्र चार अक्षरो से बना है पहले दो अक्षर अर्थात मृत्यु–शिव का शुत्रु है तथा अन्तिम दो अक्षर हमारे मित्र बने।

Biodance of Shiva on Shiv Chaturdasti

- Just as we regrow hair and nails. We do renew our body & the replacement comes from the things within and outside body.
- The endless exchange of the elements of living and non living world with the five great elements proceeds silently, giving us no hint that it is happening.
- The entire body replaces atoms @ 98 percent of the 10 to the power 2828 atoms of the body replaced annually.
- The skin is entirely replaced in a month and liver is regenerated in 6 weeks through the biodance,
- The constant renewal of our body from the world outside, stands in playful contrast to our ordinary idea of death, we do not wait on death, because we constantly return to basic elements while alive.
- The dance of Shiva as described by the great Abhinav Gupta is considered an act to arouse the dormant energies which result in evolution and involution of Universe.
- भारत में नाट्य शास्त्र के मूल कश्मीर से ही निकले है भारत मुनि कश्मीर में ही रहे है इस नाट्यशास्त्र के 36 पाठ है जो कि त्रिक सिद्वान्त के 36 तत्वों की और ईशारा करता है।
- One of the play a single actor plays is still known as Bhand Pather (भान पात्र)
- The postures and the Music was the instrument to show that Shiv is pervading this Universe in form of Natraj (The king of Vibration) & The Pulse of Consciousness. Every activity in the Universe, as well as sensations, cognitions, emotion energies glows as part of the Universal rhythem of shiva.
- Lord Shiva is believed to form two aspects. The super conscious State (samadhi) (विश्वोतीर्ण) and the tandav

or Lasya dance((विश्वमय) The former refers to the unmanifest (Nirgun) and the latter to the manifest (sagun)



- Body movement which depict a particular event or issue is called Natan or Natya (Vibration)
- Different ear rings means Ardhnarishar
- Small Hourglass shaped hand drum in the rear right hand :- Means creation by means of sound.
- Fire in the rear left hand :- Means purification & sustainance of world by means of sound & word.
- Front hand :- Means protection to devotees
- The front left hand :- Points to the foot mean libration for them who surrenders
- The demon crushed under the foot :- Means destruction of Avidya
- The surrounding circle :- Means cycle of illusion
- The hand & foot touching:- Purifying the illusion
- Fire lingas arising from the flames:- The subtle 5 Cosmic elements arrise because of his dance and thus the matter gets established.
- यही संपदन हमारे ब्रह्माण्ड तथा पिण्डाण्ड (शरीर में) व्याप्त है।

शिशिर (मकर) संक्रतिः– मकर में सूर्य

स्वर्ग लोके चिरं वासो येषां मनसि वर्तते।
यत्र कवापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे।।

"जिन मनुष्यों को चिरकाल तक स्वर्ग में रहने की इच्छा हो, उन्हें माघमास में सूर्य के मकर राशि में स्थित होने पर अवश्य स्नान करना चाहिये"

जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है उस दिन (संक्राति) को **मकर संक्रान्ति** कहते है।

मकर संक्राति पितृ क्रिया के लिए उत्तम है।

कशमीरी पडितों में इस दिन काँगडी इत्यादि दान देने की रीति है। तात्पर्य है अन्य दीन–हीने को शीत ऋतु में कष्ट निवारण हेतु वस्तुओं का दान करना।

मकर संक्राति (शिशिर संक्राति) में दान देने का मन्त्र।

हिम शीत समीरानां हसँन्ती च हसन्तिकां। उज्जूलाड.गार संयुक्ता स्वान्पित्त्तृर्थ ददाम्यहम

ॐ तत् सत् ब्रंह्मः माधमासस्य कृष्ण पक्षस्य **Name of the day** वासरां

श्री पित्रे **(Name of the departed soul along with the Gotra)** ———— पितामह ————

प्रपितामहाय, मात्रे पितामह्ये ———— प्रमातामहयै ———— वृद्धप्रमातामह्यै ————

श्री गुरुवे समस्त माता पितृणां तेषां परलोके शीत पीडा निवारणार्थ यमं अग्नि भाण्डं अन्नं फल मूलादि वस्त्र दक्षिणादि लवण सहितं ददामि – ददामि–ददामि

- One shall sprinkle water kept on the palm over the things to be donated in the name of the departed ancestors
- From this day the mother earth again starts the process of formation of produce in form of food etc.
- ...On Makar Sankrati sun begins to move North.

माघ–अमावस्या (मौनी अमावस्या) छोप मावस (15th Jan)

माघ मास के कृष्णपक्ष की अमावस्या को मौनी अमावस्या भी कहते है। कशमीरी में छोप मावस वर्ष भर में केवल इस दिन मौन व्रत धारण करने से शरीर में ऊर्जा का संचार हो जाता है।

तैलमामलकाञ्चैव तीर्थे देयास्तु नित्यशः। ततः प्रजावालयेत् वह्निं सेवनार्थे द्विजन्मनाम् कम्बला जिनरनानि वासांसि विविधनि च। चोलकानि च देयानि प्रच्छादनपटास्तया।।

इस दिन शक्कर में काला तिल मिलाकर लड्डू बनाकर तथा लाल वस्त्र ब्राह्मणों का दान देना चाहिए तथा भोजन, दक्षिणा तथा पितृ कार्य का भी विधान है।

इस अमावस्या को किसी भी पितृ कार्य का इच्छित फल मिलता है।

- One can perform rituals pertaining to Departed Souls.

सभी पूज्य बंधुओं से अनुरोध किया जाता है की 15 Jan सायं 5 बजे से रात के 10 बजे जक जिस स्थान पर भी हो मौन व्रत का पालन करे।

Let us observe the silence and hear the sound of consciouness from 5 p.m. to 10 p.m. on 15th Jan

- The ablity of keeping silence is of great impotance. It bestows all the power of self restraint. Let us celebrate the day by observing the silence

गौरी तृतीया

गौरी तृतीया माध मास के शुक्लपक्ष की तीसरी तीथि है कहते है 'गौरी' माता शारदा अर्थात स्वरस्वती ही रुप है तथा माता गौरी (पार्वती) ने श्री गणेश तथा कुमार जी का शिक्षा कार्य की पुर्ति इसी दिन पूर्ण की थी तथा इसी दिन शिक्षा पूर्ण करने का प्रमाण पत्र (certificate) प्राप्त किया था।

कालान्तर में हज़ारों वर्ष पूर्व कश्मीर में शारदा विश्वविद्यालय भी अपने वार्षिक शिक्षण स्तर को पूर्ण करके विद्यार्थीयों में प्रमाण पत्र प्रधान करता था अभी भी हमारे घरों में यह परम्परा हे कि हमारे श्रृद्धेय कुलगुरु इस दिन यही प्रमाण पत्र सभी बालक/बालिकाओं में वितरण करते हे।

इस दिन माता स्वरसवती या अन्य देव–देवियों का विग्रह (फोटो) प्रमाण पत्र के रुप में दिया जाता है। हमारे पहले गुरु माता पिता ही है इसलिए

आईये सभी माता पिता (प्रथम गुरु) इस गौरी तृतीया के अवसर पर सभी बच्चों में माता स्वरस्वती का/अथवा अन्य देवो का चित्र आशीष पत्र के रुप में प्रधान करें।

- किसी – किसी घर में इस दिन बच्चो मो प्रतःकाल में मूँग के दाने भुन कर दिया जाता है! तथा मूँग की खिचडी बनाकर माता स्वरसवती को भोग लगाकर/प्रेप्युन कर के खिलाई जाती हैं।

त्रिपुरा चतुर्थी (19th Jan)

यह अत्यतं आवश्यक है कि अपने भविष्य की पीढ़ी को पूर्ण रुप से ज्ञानवान बनाये। इस हेतु विद्यारम्भ करने की तिथि त्रिपुरा चर्तुर्थी को होता है इसी दिन से शारदा विश्वविध्यालय में नई कक्षाओं का विद्यारम्भ होता है।

यह महूर्त इतना महत्वपूर्ण है कि इस दिन किया गया कोई भी पाठ, मन्त्र व अन्य शिक्षा का आरम्भ पाठ व्यर्थ नहीं जाता है इस कारण इस महूर्त को व्यर्थ न जाने दे तथा सभी बच्चों को गायत्री मूल मन्त्र विद्या के स्वरुप में प्रधान करे ताकि हमारे भविष्य की पीढ़ी इस प्रकार अत्यंत ज्ञानवान व सक्षम बने।

ॐ भूः भुवः स्वः तत् सवितुः वरेणयं भर्गो देवस्यः धीमहि धियो योना प्रचोदयात्।

(Impart the Gaytri Mantra and its relevance to the children)

स्पंदन यदि आत्मा है तो शब्द उसका स्वरुप है त्रिपुर सुन्दरी इसी शब्द मय संसार की जननी है त्रिपुरा का रहस्य अत्यन्त दुस्तर है त्रिपुर अर्थात तीन आयाम। (The three dimensional world)

यह तीन आयाम (Three dimensions) कण–कण में व्याप्त है फिर चाहं भूः भुवः स्व हो

स्वप्न, जागृति, सुष्पति हो अथवा धोर, अधोर, धोराधोर हो सब अवस्थाओं में तीन पुर (Three dimensions) है इस का स्वरुप महाराज्ञी भगवती (तुलमुला) तथा बाला त्रिपुर सुन्दरी खनबरण (in Kulgam District) में व्याप्त देखा जा सकता है।

यह माता कश्मीर के कई मनीपीयों की ईष्ट देवी है इनमें तिक्कू, मुनषी इत्यादि नाम प्रचलित है ऋषि दुर्वासा ने स्वयं शिव व माता पार्वती से शैव व शाक्त का ज्ञान प्राप्त करके कई विध्याओं का शुभारम्भ किया इनमे एक शाखा त्रियम्बक शाखा कहलाती है जो शैव के त्रिक सिद्धान्त का आधार है इसी त्रियम्बक शाखा के उपासक कई कश्मीरी पंडितों की इष्ट देवी माता त्रिपुर सुन्दरी है इस कारण उनके गौत्र परम्पराओं में कई विशेष पद्धितियाँ भी प्रचलित है।

माघस्य शुक्लपम्चम्याँ विद्यारम्भदिनेऽपि च।
पूर्वऽह्नि संयमं कृत्वा तत्राह्नि संयतः शुंचिः।।

माघ मास के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि को वागीश्वरी अर्थात माता स्वरसस्वती का प्रादुर्भाव हुआ था इसकी पूजन विधान के अनुसार इसीकी पूजा चतुर्थी से ही प्रारम्भ करनी चाहिए उस दिन वगपासक संयम तथा नियम का पालन करते हैं इसकी जन्म मध्यरात्रि में होने के कारण त्रिपुरा चर्तुथी का अधिक महत्व रहता है तथा दक्षिण भारत में अगले दिन वसन्त पंचमी के रुप में मनाया जाता है।

- कविकुल गुरु कालिदास सरस्वती की उपसाना (काली के रुप में) करके ही कविकुल गुरु कालिदास के नाम से प्रद्धिध हुए।
- The tripura doctrine is the based on Shiv, Shakta and Vaisnav Schools of the Kashmir Philosophies and we see the inter-exchange (Minglinging) of different rituals of these schools in our daily rituals on Shivratri and Tripura Chaturthi etc when we prepare food of Vaisnav order alongwith Bali (बलि) as per Tantric order and that is special about the Kashmiri pandit ritual structure. Which is facing threat of extinction due to non compliance to the family orders (कुलाचार पद्धति)
- Bala Tripura Sundari is Isth devi of prince family Dr. Karan Singh Ji.
- The tradition of Tripura passed down to present generation through the family traditions of Tickoo's now residing at Jammu. They still have the ancient Murti and Blessings of Godess Tripura with them. Our sincere thanks to them for their valuable inputs.

सूर्य सप्तमी (The Birth of Sun) 22nd Jan

"यद्यज्जन्मकृतं पापं मया जन्मसु सप्तसु तन्ने रोगं च शोकं च माकरी हन्तु सप्तमी"

जो जो पाप मैंने सात जन्मों में किये है, वह पाप, रोग व शाप माघ की सप्तमी को नष्ट हो जाये

इस दिन यदि सिर पर किसी वस्त्र के ऊपर दीप जलाकर सूर्य के मन्त्रों का उच्चारण करे तथा सूर्य को पुष्पचावल इत्यादि अर्घ व अर्ध्व देवे तो उन भक्त जनों के शरीर की सारी व्याधियों कुछ ही समय मे नष्ट हो जाती है।

सूर्य भगवान् के मन्त्र इस प्रकार है

1. मित्राय नमः 2. रवये नमः 3. सूर्याय नमः 4. भानवे नमः 5. खगाय नमः
6. पूष्णे नमः 7. हिरण्यगर्भाय नमाः 8. मरीचये नमाः 9. आदित्याय नमः
10. सवित्रे नमः 11. अर्काय: नमः 12. भास्कराय नमः

तम एक नेमिं त्रिवृतं षोडशान्तं शताधारं विंशाति प्रत्यरामिः
अष्टकैः षड्भिर्विश्वरुपैक पाशं, त्रिमार्गभेदं द्विनिमितैकमोहम्।।

संसार की शक्ति को एक चक्र के रुप में वर्णित करते हुए कहा गया है (नेमि गोल घेरे को कहते है) जो कि चक्र के भीतर/बाहर आछादित किये है यथास्थान धारण किसे हुए उस अव्यक्त प्रकृति को ही नेमि कहते है।

सूय क्षेत्र 'मार्तण्ड' में श्री भास्कर का जन्म दिवस 13 आदित्य मण्डलो का निर्माण कर फिर सूय पूजा करके की जाती है

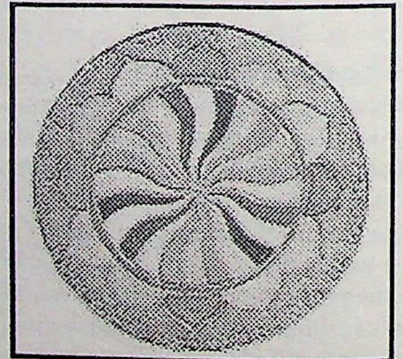
कहते है कश्यप सन्तान सूय भगवान इसी दिन ब्रह्माड में स्थापित हुए

जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके। सप्त वयाहृतिके देवि नमस्ते सूयमण्डले।

इस दिन घर के आगंन, द्वार अथवा रसोईगृह (Kitchen) मे छोटा सा सूय मण्डल बनाकर सूय के किरणों का अहवान करें ऐसा हम बच्नो से कराये तो मार्तण्ड तथा सूय जन्म की सारी परम्परां भविष्य की पीढी तक पुहँच जायेगी माघ मास के सूय का एक नाम 'त्वष्टा' हे त्वष्टा' means बढई। Means (the carpenter the builder) Because during this month Sun god rebuilds the withered area of our body.

ॐ विर्कतनो, विवस्वांश्च, मार्तण्डो, भासकरा, रविः, लोकप्रकाशकः, श्रीमाँन्, लोक चक्षुः, ग्रहेश्वर, लोकसाक्षी, त्रिलोकेश, कर्ता, हर्ता, तमिस्रहा, तपनः, तापनश्चैव, शुचि, सप्ताश्व वाहनः

कहते है जब भगवान कर्षण के पुत्र को दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण रोगग्रस्त होना पडा तब भगवान सूय ने स्वयं आकर इन नामों से सूयदेव की पूजा करने के लिए कृष्ण पुत्र "साम्ब" को निदेश दिया था आईये हम भी इस दिन इन मन्त्रों का उच्चारण करके सूय को दीप इत्यादि अर्पण करके रोगों से मुक्त हो।



आईऐ अपने घर के रसोई घर (Kitchen) में सूर्य मंडल डाले

As per the anatomy of Brain

- Left, right & the centre – Medulla oblougota (Linga), the 6 nerves which criss-cross this centre forming the mysterious 12-petalled lotus (12 Suns) is known as dwidal (द्विदल चक्र) Yoni Peetha
- ब्रह्माण्ड मे जहाँ भी जड व चेतन का प्राकट्य है वह शिव लिंग होता है, और जहाँ भी शिव लिंग है वहाँ 12 सूर्यो का वास रहता है।
- नेमि के ऊपर लोहे का घेरा (हाल) चढ़ा रहता है संसार चक्र की नेमि में भी तीन घेरे सत्व, रज व तम है इसको कश्मीरी भाषा में "नेमि क्रमि रोजुन" To remain within the limits and our limits are that of sun's.

भीष्माष्टमी 23rd Jan. 2010

माघ मास में भीष्म पितामह के निमित कुश, तिल, जल लेकर तर्पण करना चाहिये चाहे उसके माता पिता जीवित ही क्यों न हों। इस नियम के करने से मनुष्य सुन्दर और गुणवान संतति प्राप्त करता है।

माघे मासि सिताष्टयां सतिलं भीष्म तर्पणम। श्राद्ध च ये नराः कुर्युस्ते स्युः सन्तति भागिनेः।

नीचे दिये मन्त्र से जलदान भीष्म पितामह को देना चाहिए।

जनेऊ कण्ठोपवीत करके पढ़े।

ॐ तत् सत् ब्रह्मा माघ मासस्य, शुक्लपक्षस्य अष्टमयां (Day) वासरां व्याग्र पदगोत्राये संक्राति प्रवराय च अपुत्रायें ददामि तत् सलिलं भीष्म पर्वने भीष्म पितामह गाँगेय भरद्वाज स्वधा नमः। तृप्यता तृप्यतां तृप्यतां।

- भीष्म पितामह ने अपने पिता की प्रसन्नता के लिए कभी भी शादी न करने का प्रण लिया था इस कारण उनका मृत्यु पर भी विजय प्रराप्त हुई थी परन्तु सन्तान न होने के कारण सभी जन उनको जलादान देकर तृप्त करते है इस दिन का र्तपण उन सभी को पहँचता है जिनके अपने सम्बन्धी पितृ र्काय करने मे असर्मथ है।

भीम सेन एकादशी – 26th Jan. 2010

माध मास की एकादशी पर यह पर्व मनाया जाता है ऐसी मान्यता है कि पाँडवों के एक भाई भीमसेन भूख लगने के कारण कभी भी भोजन का त्याग कर उपवास नहीं रख पाते थे अपनी इस दशा से तंग आकर वे श्री कृष्ण जी के शरण में गये तथा विनती की कि है प्रभु मेने कभी कोई उपवास नहीं रखा है ऐसी अवस्था में मेरा उद्वार होना अति दुष्कर है कृपा करके मेरे लिए मार्ग का निर्देश करे! तब श्रीकष्ण जी ने उन्हें इसी एकादशी का व्रत धारण करने का निर्देश दिया कहते है वास्तव में इसी दिन से पृथ्वी व काशमिर इत्यादि खेत्रो के उदर में गर्मी लौट आती है। जब भीमसेन रात भर भूख के कारण प्रतीज्ञा न कर पा रहे थे तो उजाला करने के लिए उन्होंने जंगल में आग लगा दी थी।

भुमिसिनस बोछ लऽज कॉश हुन्द रॉचे, वोथ्रित त् ध्यूतून नंबले नार।

गोरि हिन्द् दोध च्योन यचे, भगवान चयान् यऽछ नमस्कार

जिस प्रकार व्रत काल के समाप्ति होने से पहले भीमसेन को पूर्ण फल मिल गया, उसी प्रकार ईष्वर हमारे व्रतों का फल प्रदान करें।

Our thanks to the learned persons of "Martand" Sanastha, Jammu who gave some valuable inputs in this regard.

यक्षणी चर्तुदशी-29th Jan.

यक्ष, गंधर्व व अन्य उपदेव जो वर्ष में केवल एक बार अपना-अपना भोग प्राप्त करने के लिए रहस्मय स्थानों से आकार हमारे घरों के द्वार पर खड़े हो जाते है। इनकी तृप्ति के लिए हम अपने घरों में विशेष भोज का आयोजन करते है इस दिन कश्मीर में मातृका पूजा The ritual related to observance and worshiping the energies which are dispalyed in the structure of sounds i.e. "Alphabet" known as Matrika Chakra. The day is especially observed and celebrated by the Kashmiri Pandits of Saproo Sir Name.

◆ 'पर्व' का अर्थ है गाँठ – सन्धिकाल पुराणो मे पूर्णिमा, अमावस्या, अष्टमी तथा सक्रान्ति को 'पर्व' कहा गया है, शुक्लपक्ष तथा कृष्णपक्ष की सन्धिवेला होने से पूर्णिमा तथा अमावस्या पर्व है किसी पक्ष का मध्यकाल होने से अष्टमी पर्व है। हमारे ऋषियो ने दिनभर मे तीन बार सन्धियो के आधार पर ही किया है।

माघ पुर्णिमा (काव पूर्णिमा) -30th- Jan

माघ पूर्णिमा के अवसर पर एक कल्प वास पूर्ण हो जाता है

इस पूर्णिमा को कशमीर में काक पूर्णिमा (काव पूंणिमा) भी कहते है।

काक भूषुणडी इस दिन विशेषकर सभी घरों में आकर अपना भोग ग्रहण करते है।

इसके लिए हम एक विशेष तख्ती का निर्माण करते जिसको काव पीठिका कहते (काव् पॅट्) है

इस समय एक लोक गीत भी गाया जाता है।

काव बट् कावो–खेचरे कावो

यॅति बा गंगबल, श्रानः करिथी, गुरटे म्यचे, टयोका करिथी

साने नविलेरे, कनदरे, वरि बत क्षैणे, दाल बत् क्षैणे

Oh learned crow – the crow (dwelling in the skies) who accepts the offerings.

Kindly Come from the Gangbal – after bathing

To our new house (body) for eating the offerings of Daal and Rice.

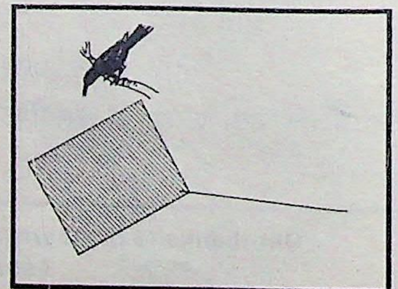
जब माता सती योगाग्नि से देह त्याग देती है तब बहुत समय तक भगवान शिव पूरे ब्रह्माण्ड में अधोरी के रुप में विचरण करते रहते है फिर एक बार इसी अवस्था में वह कश्मीर में स्थित गंगबल तीर्थ में पहुँच जाते है वहाँ काक भूषणडी होते थे (यह एक ऋषि थे जो पूर्व कर्मो के कारण काक के रुप में जन्मे थे) -- शिव हंस रुप में कुछ समय काक भूषुणडी के साथ रहे है।

ऊर्ध्वलिङ.ाय शीघ्राय त्रथाय क्रथनाय च, मंगल्याय वरेण्याय

महाहंसाय मीढुये

भीमाक्षाय भुसुण्डाय व्याल यज्ञोवीतिने

है ऊर्ध्वलिङ.ग, शीध्राय, क्रथाय, क्रथनाय मंगलकरने वाले, वरेण्याय महाहंसाय (Shiv) मीढुषे भीम आँखे वाले भूषुण्डी जो कि सर्प का जनेऊ धारण किये हुए है



एवं स्तुस्तु शक्रेण ब्रह्मणा ऋषिभिः सुरः हंसरुपं तदा व्यक्तत्वा स्वेन रुपेण शङ.रः

इन्द्र की स्तुति के पश्चात भगवान शिव ने अपना हंस रुप का त्याग किया नीकाक भूषूण्डी ने तथा इसी क्षेत्र में भगवान शिव से अमर विद्या भी सुनी थी तब से सभी कश्मीरी पंडित काक पूर्णिमा को उसका आह्वान करके भोग लगाते है कि "हे परम ज्ञानी काव, गंगबल से शिवमय संसार (विद्या) में स्नान कर आओ हमाने नये शरीर में (नया इसलिए क्योंकि पूरे माघ महीने के धार्मिक कृत्यों ने हमे नव जीवन दिया है) आकर भोग ग्रहण करें"

- A copy of laddie like object – काव पतुल – Crow's Idol (A Square front Cup made of Hay with a willow Handle) is filled with rice & vegetables.
- कल्प कास– menas a period of one month which one observes by adopting certain deceiplenes after remaining near, a holy place or following certain religious/spritual practices.

माघ पूर्णिमा के अवसर पर माघ से सम्बंधित सारे धार्मिक कार्य समपन्न होते है तथा काव को भोग लगाते ही हम इन देवो तक प्रसाद वितरण करते है

ऐन्द्र वरुण वायव्या याम्या नै ॠर्षतिकांचयै वायसा (काव) प्रतिगृहन्तु इमं अन्नं मयोद्धृतम् काकेभ्योऽन्नमः

ऐन्द्र	इनी	
वरुण	सभी देवो को इस	**घास से निर्मित काव पेटिका**
वायु	काव के द्वारा	**इस में सब्जी इत्यादि रखते है।**
यम	भोग पहुँचे	

- The crow which accepts the बलि, which is appropriates by the Brahanins is known as बलिपुष्ट काका or वायस
- घर के ऊपरी मंजिल अथवा छत पर काक पतुल बनाया जाता है जिससे काक (काव) – भटट् काव (सबसे ज्ञानी काव) भोग ग्रहण कर सृष्टि के पोषण में लगाता है।

Different aspects of Shiv Dhyan:-

a) Unclad body covered with ashes:- Means Shiva is the source of the entir universe which is his own reflection, but he also trancends the physical phenomiena.

b) Matted hocks :- Three Matted hocks means the intergration of the physical, Mental & Spiritual energies.

c) Ganga:- Means lord distroys sin, remercs ignorance and bestows knowledge purity & peace.

d) Crescent Moon :- The Spiritual Development.

सर्वाग्मानामाचारः प्रथमं परिकल्पते।
आचार प्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः।
आचार का होना आवश्यक है सम्पूर्ण आगमों ने आचार को प्रथम स्थान दिया है आचार से धर्म प्रकट होता है



ॐ श्री गणेशाय नमः

आधीनामगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम्।
उपद्रवाण्णां दलनं महादेवम् उपास्महे।।॥।।

सब क्लेशों से निवृत्ति दिलाने वाले एक देवादिदेव महादेव ही हैं। वे चाहें तो सब क्लेशों को दूर करके हमारे लिए पथ को निष्कंटक और सुगम करेगे। इस विचार से प्रेरित भक्त भगवान शिव की उपासना में अग्रसर हुआ।

अहम् पापी पाप क्षपण निपुणः शंकर भवान्!
अहम् भीतः भीता अभया वितरणे ते व्यसनिता।
अहम् दीनः दीन उद्धरणं विधि सज्जः त्वंम् इतरत्।
न जाने अहम् वक्तुम् कुन सकल शौचे मयि कृपाम्।

Sometimes a person gets dejected due to problems of life but he forgets to understand that the very difficulties bring him close to godliness.

जनस्त्वदपादाब्ज श्रवणगमनन ध्याननिपुणः
स्वयं ते निस्तीरर्गा न खलु करुण तेषु करुणा।
भवे लीने दीने मयि मननहीने न करुणा
कथं नाथ ख्यातः त्वमसि करुणासागर इति।।३।।

ईश्वर प्राप्ति में हमारी साध्ना तभी फलीभूत, हो सकती है जब ईश्वर की कृपा हो जाए। उनकी कृपा से ही उनको जाना जा सकता है।

शिव–महिम्न–स्तोत्राम्

पुष्पदन्त उवाच

ॐ महिम्नः पारंते परम अविदुषो यद्य असदृशी
स्तुतिःब्रह्मादीनाम् अपि तत अवसन्नाः त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमति परिणाम अवधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर! निर् अपवादः परिकरः ।।1।।

O. Lord Shiva, remover of all types of miseries. what wonder is there, if the prayer to you, chanted by one who is ignorant about your greatness, is worthless! Because, even the utterance (speech) of Bramha and other gods is not able to fathom your merits (i.e. greatness).
Hence, if person with very limited intellect (and I am one of them) try to offer you a prayer, their attempt deserve your special favour. If it is so, I should not be a exception. Hence (thinking like this) I begin this prayer. (1)

हे पाप–हरण करनेवाले शङ्करजी। आपकी महिमा की सीमा के ज्ञान से रहित सामान्य व्यक्ति के द्वारा की गयी आपकी स्तुति यदि आपके वरुप–वर्णन के अनुरुप नही है, तो ब्रह्मादि देवों की वाणी भी आपकी स्तुति के अनुरुप नही है (क्योंकि वे भी आपके गुणों का सर्वथा वर्णन नहीं कर सकते) किंतु इस प्रकार जब

सभी लोग अपनी-अपनी बुद्धि (की शक्ति) के अनुसार स्तुति करते हुए उपालभ्भके योग्य नहीं माने जाते हैं, तब मेरा भी स्तुति करने का (यह) प्रयास अपवादरहित ही होना चाहिये।।1।।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ मनसयोः
अतत् व्यावृत्त्या यं चकितम् अभिधते श्रुतिः अपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविध गुणः कस्य विषयः
पदे त्व अर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः (2)

I, Great God, so great is your majesty that it cannot be reached by speech and mind. Even the Vedas also, having become surprised, confirm your greatness by only saying, :Neti", (not this, not this,) while describing you. Who can praise this type of greatness of yours? With how many qualities is it composed? whose subject of description can it be? And yet even then whose mind and speech are not attached to your this new Saguna form? (2)

आपकी महिमा वाणी और मनकी पहुँच से परे है। आपकी उस महिमा को वेद भी आश्चर्य-चकित (भयभीत) होकर नेति-नेति (Not this-not this) कहते हुए आशयरूप में वर्णन करते हैं। ऐसे अचिन्त्य महिमामय आप किसकी स्तुति के विषय हो सकते हैं? क्योंकि आपके गुण न जाने कितने प्रकार के हैं अर्थात् अनन्त हैं। फिर भी हे प्रभो। परम रमणीय आपके सगुण रूप के विषय में वर्णन के लिये किसका मन किसकी वाणी उसमें प्रवृत्त नहीं होते? अर्थात्-सभी अपनी वाणी और अपने मन को प्रेरित कर वर्णन में लगा देते हैं।।2।।

Every thing in the universe has an inbuild limitations in describing the originator so,
This is universal outlook of Shaiva School which says that all the diversities are but his own attributions and everybody gets involved in them inspite/despite them knowing the cause.

मधुःस्फीता वाचः परमंमृतं निर्मितवतः
तव ब्रह्मन किं वागपि सुर गुरोः विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणी गुणकथन पुण्येन भवतः
पुनामीत् अर्थेस्मिन् पुरमथन! बुद्धिः व्यवसिता।।3।।

O, Paramaatmaa (greatest sou), as you are the very creator of speech of the Vedas, which is like highest type of nectar and as sweet as honey, how can even the speech of Brahaspati (Guru, or spiritual guide gods) surprise you? (i.e. the speech of even Brahspati is worthless before you). O, Destroyer of Three Cities of demons, thinking that my speech may become purified by this act, my intellect (Buddhi) has become prepared to sing your greatness.(3)

हे परमात्मा, आप वेद वाणी के निर्माणकर्ता हैं, जो कि अमृत का सबसे उत्तम स्वरूप तथा मधु के समान मीठा है, तब ब्रहस्पति आदि देवता किस प्रकार आपको विस्मय कर पायेंगे?
हे त्रिपुरारि इससे मेरी वाणी पवित्र होवेगी इस कारण मेरी बुद्धि (आपके स्तुति हेतु अग्रसर हुई।)

तवैश्वर्य यत् तत् जगत् उदय रक्षा प्रलय कृत्
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण-भिन्नासु तनुषु।
अभव्यानाम् अस्मिन् वरद रमणीयाम् अरमणीम्
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः (4)

O, Giver of Boons, your greatness is the cause of creation, maintenance and destruction of the whole universe, this is supported by three Vedas (i.e. Rigveda, Yajurveda and Saam Veda); it is distributed in the three qualities (i.e. Satva, Rajas and Tamas) and the three bodies (of Brahmma, Vishnu and Mehasha). such is your greatness, but certain stupid persons in this world are trying to destroy it by slander, which may be delightful to them but is really undelightful. (4)

हे वर देनेवाले शिवजी। (आप विश्वकी सृष्टि पालन एवं सहार करते हैं-ऐसा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद-(वेदत्रयी) निषकर्षारूप से वर्णन करते हैं। इसी प्रकार तीनों गुणों से विभिन्न त्रिमूर्तियों (ब्रह्मा विषणु महेश) में बाँटा हुआ जो आपका ऐश्वर्य है, उसके विषयमें खण्डन करने के लिये कुछ जड़बुद्धि अभागों को मनोहर लगनेवाला पर वास्तव में हानिकारक, व्यर्थ का मिथ्या विवाद उठाते हैं।।

किम् ईहः किं कायः स खुल किमुपायः त्रिभुवनम्
किम् आधारो धाता सृजति किम् उपादान इति च।
अतर्क्यै ऐश्वर्ये त्वयि अनवसर दुःस्थो हतधियः
कुतर्कोयं कांश्चित मुखरयति मोहाय जगतः (5)

If the Paramaatmaa (the Greatest Soul) creates the three worlds, (i.e. the whole universe), what is his gesture? What is his body? What is his plan? What is his basic (support)? What are his means (instruments, resources)? These are the useless questions raised by some stupid critics, in order to misled people, against one (i.e. you) who always remains incompatible to senses. (5)

हे वरद भगवान्। वह विधाता त्रिभुवन का निर्माण करता है तो उसकी क्या इच्छा होती है? उसका स्वरूप क्या होता है? फिर उसके साधन क्या हैं? आधर क्या और सामग्री क्या है? -इस प्रकार का कुतर्क, सब तर्को से परे अचिन्त्य ऐश्वर्य वाले आपके विषय में निराधार एवं नगण्य (उपेक्षित) होता हुआ भी सांसारिक (साधरण) जनोंको भ्रममें डालने के लिये कुछ मुर्खो को वाचाल बना देता है।।५।।

अजन्मानो लोकाःकिम् अवयव वन्तोपि जगताम्
अधिष्ठातारं किं भव विधि अनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्यात् भुवन जनने कः परिकरो।
यतो मन्दाः त्वां प्रत्यमरवर! संशेरत इमे (6)

O, Best of the Gods, are the seven Lokas, (It is believed that there are seven worlds in this universe, namely Bhooloka, Bhuvarloka, Svargaloka, Maharloka, Janaloka, Tapaloka, and Satyaloka) unborn? Was the birth of the Universe independent of its :Lord (i.e. You)? If it was so, then what were the means by which it created that the stupid critics are creating doubts about you? (ie you are the only creator of the whole Universe). (6)

हे देव! अनेक भाग होते हुए भी ये लोक क्या बिना जन्म के ही हो सकते हैं? (नहीं, कदापि नहीं) क्या विश्व की सृष्टि-पालन-संहार आदि क्रियाएँ बिना (अधिष्ठाता) कर्त्ताके सम्भव हो सकती है? या ईश्वर के बिना कोई सामान्य जीव ही अधिष्ठाता या कर्त्ता हो सकता है? (नहीं, क्योंकि) चौदह भुवनोंकी सशष्टि सृष्टि-कर्ता ईश्वर के बिना सम्भव नहीं हो सकती है? (इस प्रकार आपके अस्तित्व के प्रमाण सिद्ध होने पर भी) यतः वे (जड़ बुद्धि) शंका करते हैं, अतः वे बड़े अभागी हैं ।।6।।

What we see around us confirms the existence of god because nothing can be without the origin & the orginator.

त्रयी सांख्यं योगः पशुपति मतं वैष्णवम् इति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परम् इदम अदः पथ्यम् इति च ।
रुचीनां वैचित्रयात् ऋजु कुटिल नाना-पथ जुषाम
नृणाम् एको गम्यः त्वमसि पयसाम् अर्णव इव ।।7।।

The different practices based on the three Vedas, SaMkhya, Yoga, Pashupata-Mata, Vaish Nava-Mata etc., are but different paths (to reach to the Greatness Truth) and people on account of their different aptitude choose from them whatever they think best and deserved to be accepted. But as the sea is the final resting place for all types of streams, You are the only reaching place for all people whichever path, straight or zigzag, they may accept. (7)

ऋक् यजुः, साम-ये वेद, सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र, पाशुपतमत, वैष्णमत आदि विभिन्न मत-मतान्तर यहां हैं। इनमें से यह मत उत्तम है, वह मत लाभप्रद है- इस प्रकार की रुचियों की विचित्रता से सीधे-टेढ़े नाना मार्गो से चलने वाले साधकों के लिये एकमात्र प्राप्तव्य (Destination) आप ही तो हैं। जैसे सीधे-टेढ़े मार्गो से बहती हुई सभी नदियाँ अन्तमें समुद्र में ही पहुँचती हैं, उसी प्रकार सभी मतानुयायी आपके ही पास पहुँचते हैं ।।7।।

महोक्षः खट्वांगं परशुः अजिनं भस्म फणिनः
कपालं चे ते यत्-तव वरद! तन्त्रोपकरणम्।
सुराः तां तां ऋद्धिं दधति तु भवत् भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मा रामं विषय मृग तृष्णा भ्रमयति ।।8।।

O, Giver of Boons, the bull, the parts of cot, chisel, the elephant-skin, Ashes, the serpent, the skull; these are the articles of your household. And yet gods get all their riches merely by the movement of your eyebrows. Really, false desires for worldly things do not deceive (mislead) one who is always

absorbed in his soul (ie the yogi- in fact You). (8)

हे वरदानी शंकर! बूढ़ा बैल, खटियेका पावा, फरसा, चर्म, भस्म, सर्प, कपाल–बस इतनी ही आपके पास रखी सामग्री है। फिर भी इन्द्रादि देवताओं ने आपके कृपा–कटाक्षसे ही उन अपनी विलक्षण (अतुलनीय समृद्धियों (भोगों) को प्राप्त किया है, किन्तु आपके पास भोगकी कोई वस्तु नहीं है, क्योंकि विषय–वासनारुपी मृगतृष्णा चैतन्य आत्माराम में रमण करनेवालेको भ्रमित नहीं कर पाती है ।।8।।

ध्रवं कश्चित् सर्वं सकलम् अपरस्त्व धुवम् इदं
परो अधौव्या धौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये।
समस्ते प्येतिस्मन् पुरमथन! तैः विस्मित इव
स्तुवन् जिहेवमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरतां ।।9।।

O, Destroyer of (Three) Cities, some persons call this Universe eternal (ever lasting), others call it temporary, and yet others call it both eternal and temporary. Hence, being surprised (Perplexed) by these contradictory opinions on this subject. I am really becoming immodest in loquaciously praising You. (9)

'हे त्रिपुरारि ! कोई वादी (who argues the theory) इस सम्पूर्ण जगत् को ध्रव (नित्य) कहता है, कोई इस सबको अध्रुव (असत् या अनित्य) बताता है और कोई तो विश्व के समस्त पदार्थो में कुछ नित्य और कुछ अनित्य है – ऐसा कहता है। उन सब वादों से 'हे ईश! आश्चर्य–चकित–सा मैं आपकी स्तुति करता हुआ लज्जित नहीं हो रहा हूँ, क्योंकि मुखरता (Arguments) धृढ होती ही है' उसे लज्जा कहाँ ।।9।।

तव एश्वर्यं यत्नात् यत् उपरि विरिंचि हरि अधः
परिच्छेतु यातौ अनलम् अनल स्कन्ध वपुषः।
ततो भक्ति श्रद्धा भर गुरु गृणात् भ्यां गिरिश! यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किम् अनुवृत्ति न फलति (10)

Brahma and VishNu wanted to measure your wealth i.e. greatness. You took the form of Fire and your whole body was a column of five extending over space. What Brahma took the for of a swan and flew high to see the to (head). Vaishnu took the form f a boar and dug up downwards to set the bottom (fee). Neither could succeed. (While VaishNu confessed the truth, Brahma falsely claimed that he had found the top and persuaded the Ketaki flower to bear false witness. Shiva punished Brahma by removing one of his 5 heads and ordered that henceforth the Ketaki flower should not be used for his worship). When ultimately both praised you with full devotion and faith, you stood before them revealing your normal form. O, mountain-dweller, does not toeing your line always bear fruit? (10)

हे गिरिश! (अग्नि–स्तभ के समान) आपका जो लिंगकार तैजस रुप (ऐश्वर्य) प्रकट हुआ उसके ओर –छोर जाननेके लिय ऊपरकी ओर ब्रह्मा तथा नीचेकी ओर विष्णु बड़े प्रयत्न से गये, पर (वे दोनों ही) पार पाने में असमर्थ रहे। तब उन दोनों ने श्रद्धा और भक्ति से नतमस्तक हो आपकी स्तुति की! (तब उनकी स्तुति से

प्रसन्न हो) आप उन दोनों के समक्ष स्वयं प्रकट हो गये। हे भगवान! श्रद्धा-भक्तिपूर्वक की गयी आपकी सेवा (स्तुति) क्या फलीभूत नहीं होती? (अर्थात् अवश्य फलीभूत होती है) ।।10।।

The pillar of fire which appeared between lord Vishnu and Lord Brahama is known as Jyotirlinga. This linga does not have the pranali part. (The absolute merger of matter with energy). The Kashmiri Pandits still worship this type of linga in form of Sunya Putla (सोन्य पुतुल) It is putla because the essential part is still to join with it and only then will it transform into absolutness. That essential part is Pranali (Pranali or energy). The सोन्य पुतुल does not have pranali and the Har Ratri (हरात्रि) is all about the intermingling of Pranali with Shiv Pillar.

अयत्नाद् आसादय त्रिभुवन्म अवैर व्यतिकरम्
दशास्यो यत् बाहून अभृत रण कण्डू पर वशान्
शिरः पदम् श्रेणी रचित चरण आम्भोरुह बलेः
स्थिरायाः त्वत् भक्तेः त्रिपुरहर!विस्फूर्जितम् इदम् (11)

Oh, destroyer of the three cities! The effortless achievements of the ten-headed Ravana in making the three worlds enemy less (having conquered) and his arrant eagerness for further fight by stretching his arms, are but the result of his constant devotion to you lotus feet which he ever laid the lotus garland consisting of his 10 heads. (11)

हे त्रिपुरारि! दशमुख रावण तीनों भुवनों का निष्कण्टक राज्य बिना प्रयत्न (अनायास) प्राप्तकर जो अपनी भुजाओं की युद्ध करनेकी इच्छा पूर्ण न कर सका (प्रतिभट से युद्ध करने की इच्छा पूर्ण न कर सका, क्योंकि कोई ऐसा शत्रु मिला ही नहीं) यह सब आपके चरणकमलोंमें अपने दस सिररुपी कमलोंको बलि चढ़ाने का तथा आपमें अविचल भक्ति रखने का ही प्रभाव है ।।11।।

अमुष्य त्वत् सेवा सम् अधिगत सारं भुजवनम्
बालात् कैलासोपि त्वत् अधिवसितौ विक्रम यतः ।
अलभ्यः पाताले अपि अलस चलितगुंष्ठ शिरसि
प्रतिष्ठा त्वयासीत् ध्रुवम् उपचितो मुह्यति खलः (12)

Having obtained all his powers through worshipping you, RavaNa once dared to test the power of his arms at your own dwelling place (Kailas Mountain). When he tried to lift it up, you just moved a toe of your foot on a head of his and lord! Ravana could not find rest or peace even in the nether-world. Surely, power maddens the wicked. finally RavaNa re-established his faith in you. (12)

आपकी सेवा से रावण की भुजाओं में अपार शक्ति आई हुई थी। अभिमान में आकर वह अपना भुजबल आपके निवास-स्थान कैला के उठाने में भी तौलने लगा, पर आपने जो पैरके अँगूठेकी नोकसे ज़रा सा कैलास को दबा दिया तो उस रावण की प्रतिष्ठा (स्थिति) पाताल में भी दुलर्भ हो गयी। (वह नीचे-ही-नीचे खिसकता चला गया।) प्रायः यह निश्चित है कि दुष्ट व्यक्ति समृद्धि को पाकर उपकारी दाता के प्रति भी कृतघ्न हो जाता है ।।12।।

Ravana composed a hymn to please lord Shiva, when his arm got stuck (known as Tandav Stortra)

यत् ऋद्धिं सुत्राम्णो वरद! परमोचैः अपि सतीम्
अधचक्रे बाणः परिजन विधेय त्रिभुवनः ।
न तत् चित्रं तस्मिन् वरि वसितरि त्वत् चरणयोः
न कस्य अपि उन्नत्यै भवति शिरःस्त्वय अवनतिः (13)

Oh boon-giver! Baana, the demon king made all the three worlds were him with all their attendants and even the greatest wealth of Indra was a trifle for him. It was not a surprise at all, since he, 'dwelt' in your feet; who does not raise in life by bowing his head to you? (13)

'हे वरदानी शंकर! त्रिभवन को वशवर्ती बनाने वाले बाणासुरने इन्द्रकी अपार सम्पत्तिको भी जो अपने समक्ष नीचा कर दिया, वह आपके चरणों के शरणागत (सेवक) उस बाणासुर के विषय में कोई आश्चर्य बात नहीं है, क्योंकि आपके समक्ष सिर झुकाना (नतमस्तक होना) किसकी उन्नति के लिये नहीं होता ? अर्थात् आपके चरणों में सिर झुकाने से सबकी सब प्रकार की उन्नति होती है। ।।13।।

आकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षय चकित देवासुर कृपा
विधेयस्य आसीत् यःत्रिनयन! विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियम् अहो
विकारोपि श्लाध्यो भुवन भय भंग व्यसनिनः (14)

हे त्रिनेत्र शंकर! समुद्रमन्थन से उत्पन्न विषकी विषम ज्वाला से असमय में ही ब्रह्माण्ड के नाश के भय से चकित देवों और दानवों पर दयार्द होकर विषपान करनेवाले आपके कण्ठ में जो कालापन (नीला धब्बा) है, वह क्या आपकी शोभा नहीं बढ़ा रहा है। (अर्थात् महोपकार के कार्य से उत्पन्न होने के कारण और अधिक शोभा बढ़ा रहा है)। वस्तुतः संसार के भय को दूर करने के स्वभाववाले महापुरुषों का विकार भी प्रंशसनीय होता है ।।14।।

When the ocean was being churned by the gods and demons for 'amRit.h' (nectar), various objects came forth: at one point, there emerged the 'kAlakUTa' poison which threatened to consume everything. The gods as well as he demons were stunned at the prospect of the entire universe coming to an end, O, three-eye lord, who is ever compassionate and engaged in removing the fear of the world, you took it (poiso) on yourself by consuming it. (On Parvati's holding Shiva became 'neelkanTha'). It is strange that this stain in your neck, though appearing to be a deformity, actually adds to your richness and personality. (14)

When after the Sagar Mathan there immerged a deadly poison. No body could do anything then only Lord Shiva drank that poison and kept that at his trought. Shiva is also known as Neel Kanth (Blue Throught). It also indicates that during our life time we encounter many negative things, but we shall neither vomit them out because it would pollute others, nor shall we shallow them, then they will polute us, instead we shall keep them between the two.

अिसद्धार्थाः नैव क्वचित् अपि सदेवासुर नरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन् ईश त्वाम् इतर सुर साधारणम् अभूत
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि विशिषु पथ्यः परिभवः (15)

The cupid's (love-god manmatha's) (flower) arrows never return unaccomplished whether the victims were gods or demons or men. However, O. master! he has now become just a remembered soul (without body), since he looked upon you as any other ordinary god, shot his arrow and got burnt to ashes, in no time. Insulting, masters (who have controlled their senses), does one no good. (15)

हे जगदीश! जिस कामदेव के बाण देव, असुर एवं नरसमूह वाले विश्वमें नित्य विजेता रहे, कहीं भी असफल होकर नहीं लौटते थे, वहीं कामदेव जब आपको अन्य साधारण देवताओं के समान समझने लगा, तब आपके देखते ही वह स्मृतिमात्र शेष रह गया। (भस्म हो गया) । (सच है कि) जितेन्द्रियों का अपमान कल्याणकारी नहीं, अपितु घातक होता है। ।।5।।

Because of burning of the desires (Kamdev) the lord shiva is also known as Madan. In Kashmir this synonium of Shiva is commonly used in folk lores even among muslims too.

मही पादाघातात् व्रजित सहसा संशयपदम्
पदं विष्णोः भ्राम्यत् भुज परिघ रुग्ण ग्रह गणम्।
मुहुः द्यौः द्यौस्थ्यं यात्यनि भृत जटा ताडित तटा
जगत् रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता (16)

You dance for protecting the world, but strangely, your glorious act appears to produce the opposite result in that the earth suddenly struck by your dancing feet doubts that it is coming to an end; even VishNu's domain is shaken in fear when your mace like arms bruise the planets; the godly region feels miserable when its banks are struck by your agitated matted locks (of hair)! (16)

हे ईश! जब आप ताण्डव (नर्तन) करते हैं तब आपके पैरों के आघात (चोट-) से पृथ्वी अचानक संशय- (संकट) को प्राप्त हो जाती है, आकाशमण्डल और इसके ग्रह--नक्षत्र--तारे आपके घूमते हुए भुजदण्डों (की चोट-) से पीड़ित हो जाते हैं स्वर्ग आपकी खुली हुई (बिखरी) जटाओं के किनारों की चोट से बारम्बार दुखी हो जाती है। यद्यपि आप जगत् की रक्षा के लिये ही ताण्डव करते हैं, फिर भी आपकी प्रभुता वाम (चिन्ता पैदा करने वाली) हो ही जाती है ।।16।।

Apparantly the squences in ones life, seems to be cause of worry, but in reality it is the maintianance of cosmic order by Shiva.

वियत् व्यापी तारागण गुणित फेनोत्गम रुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषत लघु दृष्टः शिरसि ते ।

जगत् द्वीपाकारं जलधि वलयं तेन कृतम इति
अनेन एव उन्नेयं धृतमहिम दिव्य तव वपुः (17)

The divine river flows extensively through the sky and its charm is enhanced by the illumination of the foam by the groups of stars. (Brought down to the earth by the King Bhagiratha by propitiating Lord Shiva and known as Ganga) it creates many islands and whirlpools on the earth. The same turbulent river appears like a mere droplet of water on your head. This itself shows how lofty and divine your body (form) is! (17)

हे जगदीश! समस्त आकाश में फैले तारों के सदृश फेन की शोभावाला जो गंगाजल प्रवाह है, वह आपके सिरपर जल बिन्दु के समान (छोटा) दिखाई पड़ा और (सिर से नीचे गिरने पर) उसी जलबिन्दुने समुद्र रुपी करधनी-(घेरे) के भीतर संसार को द्वीप के समान बना दिया। बस, इसीसे आपका दिव्य शरीर सर्वोत्कृष्ट है- यह अनुमान हो जाता है ।।17।।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिः अगेन्द्रो धनुः अथो
रथांगे चन्द्रार्कौ रथ चरण पाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोयं त्रिपुर तृणम् आडम्बर विधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः (18)

When you wanted to burn the three cities, you had the earth as the chariot, Brahma as the charioteer, the Meru mountain as the bow, the sun and the moon as he parts of the chariot and VaishNu himself (who holds the chariot-wheel in his hand-Sudarshan chakra), as the arrow. Why this demonstrative show when you as the dictator of everything, could have done the job as a trifle? The Lord's greatness is not dependent on anybody or anything. (Incidentally there is a view that the burning of the three cities would refer to the burning of three kinds of bodies of an i.e. 'sthula sharira', sukshma sharira' and 'karana sharira') (18)

हे परमेश्वर! त्रिपुरासुररुपी तृणको दग्ध करनेके इच्छुक आपने पृथ्वीको रथ, ब्रह्माको सारथि, सुमेरु पर्वतको धनुष, चन्द्र और सुर्यको रथके दोनों चक्के और चक्रपाणि को (जो) बाग बनाया! (तो) यह सब आडम्बर करनेका क्या प्रजोजन था? (सर्वसमर्थ आप उसे इच्छामात्रसे जला सकते थे)। निश्चय ही अपने खिलौनोंसे खेलती हुई ईश्वरकी बुद्धि पराधीन नहीं होती (अर्थात् वह स्वतन्त्ररुपसे अपने खिलौनों से खेलती रहती है) ।।18।।

हरिस्ते साहस्रं कमल बलिम् आधाय पदयोः
यत्-एकोने तस्मिन् निजम् उदहरत् नेत्र कमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिम् असौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर हर! जागर्ति जगताम् (19)

VishhNu once brought 1000 lotuses and was placing them at your feet, after placing 999 flowers he found that one was missing; he plucked out one of his own eyes and offered it as a lotus; this supreme

exemplification of devotion on his part was transformed into the wheel (Sudarshana chakra) in his hand, which he used for protecting the world. (19).

हे त्रिपुरारि भगवान विष्णुने आपके चरणों में एक हजार कमल चढाने का संकल्प किया था। उनमें जो एक कमल कम पड़ गया तो उन्होंने अपना ही नेत्रकमल उखाड़ कर चढ़ा दिया। बस, उनकी यही भक्तिकी पराकाष्ठा सुदर्शन चक्रका स्वरुप धारण कर त्रिभुवनकी रक्षाके लिये सदा जागरुक है। (भगवान् शंकर ने प्रसन्न होकर श्रीविष्णुको चक्र प्रदान कर दिया था, जो विश्वका संरक्षण अनुग्रह-निग्रह-द्वारा करता है) ।।19।।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनम ऋते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान प्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ़परिकरः कर्मसुजनः (20)

You ensure that there is a connection between cause and effect and hence when men perform a sacrifice they obtain good results. Otherwise how can there be future result for a past action? Thus on seeing your power in rewarding people performing sacrificial worship, with good results, men alive in Vedas and firmly engage themselves in various worshipful acts. (20)

हे त्रिपुरारि! (बिना फल दिये ही यज्ञादिके समाप्त हो जानेपर यज्ञकर्ताओं को यज्ञफल से सम्बन्ध करने के लिये (फल दिलाने के लिये) आप तत्पर रहते हैं। कर्म तो करनेके बाद नष्ट हो जाता है (वह जड़ है) चेतन परमेश्वरकी आरधनाके बिना वह नष्ट कर्म फल देने में समर्थ नहीं होता है। अतः आपको यज्ञों में फल देने में समर्थ, दाता देखकर पुण्यात्मा लोग वेदवाक्यों में श्रद्धा--विश्वास रखकर (यज्ञ-) कर्ममें तत्पर रहते हैं ।।20।।

Tripurari, ensures the result of action performed by the beleivers of cosmic order.

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिः अधीशस्तनु भृताम्
ऋषीणाम् आर्त्विज्यं शरणद! सदस्याः सुरगणाः!
क्रतुभ्रंशः त्वतः क्रतुफल विधान व्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा विधुरम् अभिचाराय हि मरवाः (21)

All the same, O Protector, though you exert to rewared all sacrifices. those done without faith in you become counter-productive, as exemplified i the case of the sacrifice performed by Daksha; Daksha was well-versed in the art of sacrifices and himself the Lord of creation; besides, he was the chief performer: the great maharishis were the priests and the various gods were the participants! (Daksha did not invite Shiva and insulted him greatly; thus enraged, shiva destroyed the sacrifices and Daksha too). (21)

हे शरणदाता शंकर! कार्यमें कुशल प्रजाजनों का स्वामी प्रजापति दक्ष यज्ञका

यजमान (क्रतुपति) बना था। त्रिकालदर्शी ऋषिगण याज्ञिक (यज्ञ करानेवाले होता आदि) थे। देवगण यज्ञ के सामान्य सदस्य थे। फिर भी यज्ञ के फल के वितरण के व्यसनी आपसे ही यज्ञका विध्वंस हो गया। अतः यह निश्चित है कि अश्रद्धासे किये गये यज्ञ (कर्म) कर्ताके विनाशके लिये ही सिद्ध होते हैं। (दक्षने श्रद्धावर्जित यज्ञ किया था) ।।21।।

प्रजानाथं नाथ! प्रसभम् अभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहित् भूतां रिरमयिषुं ऋष्यस्य वपुषा
धनुष्पाणे यातं दिवम् अपि सपत्रा कृतम् अमुम्
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याध रभसः (22)

O, Protector! Once Brahma became infatuated with his own daughter, When she fled taking the form of a female deer he also took the form of a male deer and chased her. you took the form of hunter and went after him, with a bow in hand. Struck by your arrow and very much frightened. Brahma fled to the sky taking the from of a star. Even today he stands frightened by you. (22)

हे स्वामिन्! (एक बार) कामुक ब्रह्माने अपनी दुहितासे हठपूर्वक रमण करने की इच्छा की। वह लज्जासे मृगी बनकर भागी, तब ब्रह्मा भी मृग बनकर उसके पीछे दौड़े। आपने भी उन्हें दण्ड देने के लिये मृगके शिकरी के वेग के समान हाथ में धनुष लेकर बाण चला दिया। स्वर्ग में भी जाने पर ब्रह्मा आपके बाण से भयभीत हो रहे हैं। उन्हें बाण ने आज भी नहीं छोड़ा है, अर्थात् ब्रह्मा 'मृगशिरा' नक्षत्र बनकर भागे तो बाण 'आर्द्रा' नक्षत्र बनकर आज भी पीछा करता है। (ये दोनों आकशमण्डल में आगे-पीछे देखे जा सकते हैं) ।।22।।

Desires never follow the order & Lord Shiva ensures complience to the order in the solar orbit and it is still being chased by this constellation.

अपूर्व लावण्यं विवसन् तनोस्ते विमृशतां
मुनीनां दाराणां समजनि सकोप व्यतिकरः।
यतो भग्ने गुह्यसकृत् अपि सर्पयाँ विदधतां
ध्रुवं मोक्षोऽश्लीलं किम् अपि पुरुषार्थं प्रसविते (23)

Rishies cursed the Shiva when he visited them. Shiva was in Digamber form they curshed him to become Alinga (without Mark) that Shiva's Mark Linga) even if beleived to be cursed is the sorce of liberation for all. That cursed linga (Shiv linga) with hundreds of holes is still at the Hatkeshwar (Shopian) area of Kmr.

अर्थः- ''हे महादेव! आपके वस्त्रों रहित शरीर की श्रपूर्व सुन्दरता को देखने से ऋषि-पत्नियां जब क्षुब्ध हो उठीं तो उन्होंने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अलिगं होने का शाप दिया। आपने उनका शाप तो सत्य होने दिया परन्तु अपने वरद स्वभाव के कारण यह वर दिया कि इस तीर्थ का फल (पापों, शापों और दोषों से मुक्त होना)

उसी को प्राप्त होगा जो तीर्थ स्नान करके इसी लिङ्ग अवस्थाकी पूजा करेगा। हे भगवन! जब आपके एक अश्लील अंगकी पूजा से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है तो उस व्यक्ति को क्या नहीं मिल सकता जो आपके समग्र रुप की मनोयोग से आराधना करने में जुट गया हो। ।।23।।

◆. विश्व में लिंड. तीन प्रकार के है

◆ पुरुष लिड.ग 2) स्त्री लिड.ग 3) नपुसंड.क लिड.ग

परन्तु इस जगत का लिड.ग क्या है?

What is the symbol/mark of this World?

It is Shiv Linga.

इसका लिड.ग साक्षात शिव है अर्थात शिवलिड.ग है क्योंकि यह सारा जगत शिवमय ही है।

◆What is Alinga?

अलिड.ग अवस्था के Steps

Steps for the state of Alinga (Symbol lessness/Marklessness)

1. आनन्द दशा
2. उद्भव व प्लुति----Because of Entrance in Par-Dharm
   Because of elevation from sodily Existence
3. **कम्पन हृदय में देहरुपता** merges merges in chit रुपता
4. **Agadh Sleep अगाध निद्रा**– some element of Past reflections remain and being at high level of consciousness, feels incompatibility,
5. महाव्याप्ति – Capable of creating, Preserving and destroying this universe.
   घूर्णि , शिवव्याप्ति

The first four stages are connected with आत्म व्याप्ति

The final stage is connected with Shiv व्याप्ति (This is the Alinga Avastha)

आनन्द चक्रं वह्नयाश्रि, कन्द उद्भव उच्यते। कम्पो हृंत् ताहु निद्रा च, घूर्णिः स्यादूर्ध्व कुण्डली

1. Anand Stage is at Heart & Triangular place i.e. Birthplace.
2. उदगम Starts in Heart & Meru dandh (रीढ़ की हड्डी)
3. कम्पन दशा हृदय में
4. Sleeping Stage Heart & तालु the intermingluary of लम्भिक with चतुष्पथ।

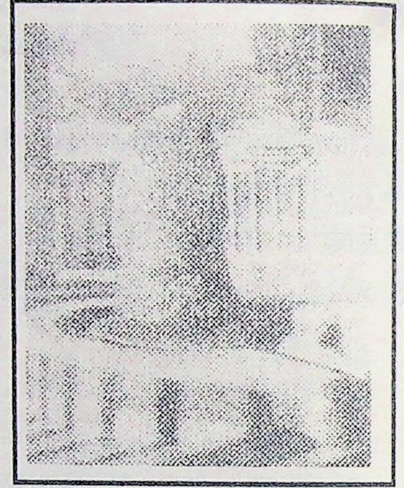
यह श्लोक प्रायः काश्मीर में प्रचलित है। कहा जाता है कि इसका सम्बंध द्विग्राम, शोपयान, (काश्मीर) के समीप 'स्थित कपाल मोचन तीर्थ पर घटित एक घटना के साथ है। इस तीर्थ पर ऋषियों की पत्नियां तीर्थ-स्नान करने के लिए आई थीं। वहां उन्होंने एक द्विगम्बर योगी को देखा जो वास्तव में शिव-शंकर थे।

परिचय न होने के कारण ऋषि-पत्नियां किसी आशंका-वश क्रोध में आकर शाप दे बैठीं जिसे सुनकर शंकर जी ने अपने वरदान से लिङ्ग को पूज्य बना दिया।

यही लिङ्ग भगवान हाटकेश्वर के रुप में प्रसिद्ध है।

कपालमोचन तीर्थ

सृष्टि के प्रारम्भ में जब लीलाधारी भगवान शिव अग्नि खम्भ के रुप में भगवान विष्णु व ब्रह्मा जी के समक्ष प्रकट हुए तो दोनो देवों ने इस अग्नि खम्भ की के छोर ढूँढने का संकल्प लिया तथा बहुत समय तक, ब्रह्मा आकाश में तथा विष्णु की पाताल में इसका छोर ढूंडते रहे परन्तु इस खम्भ का कही छोर नहीं मिला।



थक हार कर दोनों देव वापस आकार अपना--2 वृत्तान्त सुनाने लगे ब्रह्मा जी ने झूठ बोल कर विष्णु जी से कहा कि उसने इस ज्योतिमय खम्भ का छोर आकाश में ढूँड लिया है तथा इसकी गवाही (wtiness) के रुप में गाय व केतकी फूल को आगे किया गाय माता ने सिर हिलाकर हामी भरी परन्तु पूँछ हिला कर न करती रहीं।

ब्रह्मा जी की इस भूल पर यह ज्योर्तिमय खम्भ बींच में फट पड़ा व प्रभु सदाशिव क्रोद्ध अवस्था में शाप दिया कि ब्रह्मा, गाय व केतकी की पूजा इस संसार में कोई न करेगा, परन्तु गाय ने पूँछ से सत्य का साथ दिया था इस कारण गाय के मुख की अपेक्षा पूँछ की पूजा अधिक की जाती है भगवान शिव ने अत्यन्त क्रोद्ध अवस्था मे ब्रह्मा जी के पाँच सिरो में एक सिर काट कर अपने हाथ में धर लिया कुछ समय पश्चात् क्रोद्ध के शाँत होने पर शिव समझ गये व प्रायश्चित करने का संकल्प किया वे इस ब्रहाहत्या के पाप से छूटना चाहते थे भगवान् शिव 12 वर्षो के उपरान्त वाराणसी भी गये जहाँ यह कपाल उनके हाथों से छूट गया परन्तु वापसी यात्रा में व फिर प्रकट हो गया।

अन्त में शिव धर्म स्वरुप नन्दी पर विराजमान होकर अत्यन्त तीव्र गति से आगे बडते हुए कश्मीर के शेपियान ग्राम के एक तीर्थ स्थल पर पहँचे। इस स्थान पर नन्दी के खुरो के तीव्र वेग से बड़ी चटट्ान टूट गई तथा एक सरोवर का निर्माण हुआ इसी सरोवर में स्नान करने से शिव को हाथों पर बने ब्रह्मा जी के कपाल का मोचन हो गया तथा ब्रह्मा हत्या के शाप से मुक्ति हो गई इस कारण यह तीर्थ राज कापलमोचन के नाम से तीनो लोको में प्रसिद्ध हो गया पूरे विश्व में जो मनुष्य श्राद्ध कर्म का अधिकारी नहीं होता है उसका श्राद्ध पूर्ण रुप से इस तीर्थ पर सम्पन्न होता है जो व्यक्ति अकाल मृत्यु, अल्प आयु व उस स्थान पर प्राणों का त्याग करता है जहाँ प्रेतकर्म सम्भव न हो सके ऐसे सभी पितृरो का प्रेत मोचन यही होता है।

आदृश्य जो शिव है वह दृश्य प्रंपच(लिंग) का मूल कारण है इससे शिव को अलिंग कहते है और अव्यक्त प्रकृति को लिंग कहा गया है। इसलिए वह दृश्य जगत भी शैव यानि शिवस्वरुप है प्रधान और प्रकृति को ही उतमैलिंग कहते है वह गंध, वर्ण रस हीन है तथा शब्द र्स्पश रुप आदि से रहित है जगत आदि कारण, पंचभूत स्थूल व सूक्ष्म शरीर जगत का स्वरुप सभी अलिंग शिव से ही उत्पन्न होता है।

- The surnames of Nagars are Baxi, Desi, Devan Kazi, Kazvmda, Munshi etc. which are still being used among Kashmir Pandits.
- It is also said that being the enimies of Nagaas they are called Nag-Har (the Killer of Naags). Nagaris were expert interpreters of religion and have always done this without salaries. The kings gave them land for maintenance. They propagated the Shiv Philosophy to Egypt, Babulon, Brazil, Kabul, Indo China and Combodia being one among the oldest Brahamin Groups.
- Even during the period of Alexander's invasion to India many Nagaries had settled in Kashmir and later they shifted to other parts of world as Nagars (नागर). Many Soldiers of Alexander got influenced by Nagars.
- They kept one thing intact i.e. the theory of Hat Keshwar.
- It is said that the Nagars saved life of King Chanatkar of Anorta. His wife i.e. queen visited them and persuaded 68 out 72 families of Nagars to accept the land at Gujarat and Build the temple of Hatkeshwar in their honour.
- That fire pillar, Dimensionless pillar is known as (सोन्य पतुल) & the Kashmiri Hindus do worship this idol once in a year on a day known as Har Ratri – हररात्रि (हैरत)।
- At the foothills of the peerpanchal range is Diagam Naagbal in shopian district of Kashmir, where the Hatkeshwar Thirth is situated.
- There is a village near by the "Hatkeshwar" known as Rishi Gaom where many of the Saptrishis are said to be residing. The care of pond of Saptrishis is being taken by Kashmiri Pandts. We are thankful to them for their valuable inputs.

स्वलावण्य आशंसा धृत धनुषम् अह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुर मथन् पुष्पायुधम् अपि।
यदिस्त्रैणं देवी यम निरत देहार्ध घटनात्
अवैति त्वाम् अद्धा वत वरद! मुग्धाः युवतयः (24)

O, destroyer of the three cities! Bhoon-giver! Practitioner of austerities! Before the very eyes of Parvati, you reduced Manmatha (the god of love) to ashes, the moment he tried to arouse passion in you for Parvati, by shooting his famous flower arrows. Even after witnessing this, if Parvati, thinks that you are attracted by her physical charm, o the basis of your sharing half the body with her, certainly women are under self-delusion. (24)

हे त्रिपुरारि! हे वरदानी शंकर जी! अपने सौन्दर्य से शिवपर विजय प्राप्त कर लूँगा– इस सम्भावना से हाथ में धुनष उठाये हुए कामदेव को सामने ही तुरन्त आपके द्वारा तिनके की भाँति भस्म होता हुआ देखकर भी यदि देवी (पार्वतीजी)

यम नियम पर चलने और अर्धनारीश्वर बनाने (आधे शरीर में पार्वती को स्थान देने) के कारण आपको स्त्रीभक्त जानती हैं तो यह उनकी भूल है। स्त्रियां स्वभाव से ही भूल-भूलैयों में रहती हैं।।24।।

श्मशानेषाक्रीडा स्मरहर! पिशाचाः सहचराः
चिताभस्मालेपः सृक् अपि नृकरोटी परिकरः।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद! परमं मंगलम् असि ।।25।।

O, boom giver! O, destroyer of Cupid! You play in the burning ghats, your friends are the ghosts. Your body is smeared with the ashes of the dead bodies. Your garland is human skull. Every aspect of your character is thus inauspecious. Let it be. It does not matter. Because, with all these known oldness, you are quick to grant all auspecious things to the people who just think of you. (It is interedting to note here that in his Devi aparaadha KshamApana stotra Shankaracharya says that, despite his poor and deficient possessions, Shiva got the power to grant booms entirely because of his having taken the hand of Parvati in marriages, in the previous shloka, Pushhpadanta calls it native on the part Parvati, if she thinks that Shiva is attaracted by her charm simply because he is sharing half the body with her. This dichotomy etc. is due to the custom that when a particular lord is to be extolled, the other gods are to be belittled to some extent). (25)

हे कामरिपु! हे वरद शंकर जी! आप श्मशानों में क्रीड़ा करते हैं, प्रेत-पिशाच गण आपके साथी हैं, चिताकी भस्म आपका अंगराग है, आपकी माला भी मनुष्य की खोपड़ियों की है। इस प्रकार यह सब आपका अमंगल स्वभाव (स्वाँग) देखनें में भले ही अशुभ हो, फिर भी स्मरण करनेवाले भक्तों के लिये तो आप परम मंगलमय ही हैं।।25।।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधम् अवधायात्त मरुतः
प्रहृष्यत् रोमाणः प्रमद सलिलोत् उसंगित दृशः।
यत् आलोक्य आह्लादं हृद इव निमज्जय अमृतमये
दधति अन्त तत्वं किम् अपि यमिनःतत् किल भवान्।।26।।

The great yogis regulate their breath, control and still their mind, look inward and enjoy the bliss with their hair standing on edge and eyes filled with tears of joy. It looks as though they are immersed in nectar, that bliss which they see in their heart and exult thus, is verily you Yourself. (26)

हे प्रभो! (शम-दम आदि साधनों से सम्पन्न) यमीलोग शास्त्रोपदिष्ट विधि से - वायु रोककर (प्राणयाम कर) हृदयकमल में बहिर्मुखी मनको सभी वृत्तियों से शून्य करके अपने भीतर जिस विलक्षण आनद रुप परब्रह्म तत्त्व का दर्शन कर रोमान्चित हो जाते हैं। और उनकी आँखें आनन्द के आँसूओं से भर जाती हैं, उसी समय मानो वे अमृतके समुद्र में अवगाहन कर दिव्य आनन्द का अनुभव करते हैं, वह निर्गुण आनन्दस्वरुप ब्रह्मा निश्चयरुप से आप ही हैं ।।26।।

त्वम् अर्कः त्वं सोमः त्वम् असि पवनः तवं हुतवहः
त्वम् आपः त्वं व्योम त्वमु धरणिः आत्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नाम् एवं त्वयि परिणता विभ्रति गिरम्
न विद्मेतत् तत्त्वं वयमिह तु यत् त्वं न भवसि ।।27।।

You are the sun, the moon, the air, the fire, the water, th sky (ether/space), and th earth (the five elements of bhUtA's). you are the self which is omnipresent. Thus people describe in words every attribute as yours. On the other hand, I do not know any fundamental principal of thing or substance, which you are not.

हे भगवन्! परिपक्व बुद्धिवाले प्रौढ़ विद्वान-आप सूर्य हैं, आप चन्द्र हैं आप पवन हैं, आप अग्नि हैं, आप जल हैं, आप आकाश हैं, आप पश्थ्वी हैं, आत्मा हैं- इस प्रकार की सीमित अर्थयुक्त वाणी आपके विषय में कहते रहे हैं, पर हम तो विश्व में ऐसा कोई तत्व (वस्तु) नहीं देखते (जानते) जो स्वयं साक्षात् आप न हों।।27।।

Pure Monstic view of Kashmiri Shaivism where the entire word is but his mainfestation and is as important as Shiva.

त्रयीं तिस्त्रोः वृती त्रिभुवनम् अथो त्रीन् अपि सुरान्
अकाराद्यैः वर्णै त्रिभि अभि दधत्तीर्ण विकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिः अवरुन्धानम् अणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद! गृणाति ओम इति पदम्।।28।।

O, grantor of refuge and protection! The word 'OM' consists of the three letters 'a', 'u' and 'm'. It refers to the three Vedas (Rik, YajuH and SAma), the three states (Jaagrat.h, swapna, and sushhupti-awakened, dreaming and sleeping), the three worlds (BhUH, bhuvaH and SuvaH) and the three gods (Brahma, VishNu and Mahesha). It refers to you yourself both through the individual letters as well as collectively; in the letter form (i.e. the total word 'OM') it refers to your omnipresent absolute nature, as the fourth state of existence i,.e. 'turiyaM' (sleep-like yet awakened and alert state, as a fully-drawn bow). (28)

हे शरण देनेवाले! ओम्-यह शब्द अपने व्यस्त (पृथक्-पृथक् अक्षरवाले) अकार, उकार, मकाररुपसे तीनों वेद (ऋक्, यजुः साम), तीनों अवस्थाएँ (जाग्रत्-स्वप्त-सुषुप्ति), तीनों लोक (स्वर्ग-भूमि-पाताल), तीनों देवता (ब्रह्मा-विष्णु-महेश), तीनों शरीर (स्थूल-सूक्ष्म-कारण), तीनों रुप (विश्व-तैजसा-प्राज्ञ) आदि के रुप में आपका ही प्रतिपादन करता है तथा आपने अवयवोंके समष्टि- (संयुक्त-समस्त) रुप (ओम्-) से निर्विकार निष्कल तीन अवस्थाओं एवं त्रिपुटियों से रहित आपके तुरीय स्वरुप की सूक्ष्म ध्वनियों से ग्रहण कर प्रतिपादन करता है। ।।28।।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिः अथोग्रः सह महान्
तथा भीमेशान इति यत् अभिधान अष्टकम् इदम्
अमुष्मिन प्रत्येकं प्रविचरति देव! श्रुति अपि
प्रियाय अस्मे धाम्ने प्रणिहित नमस्योस्मि भवते ।।29।।

I salute you as the dear abode of the following 8 names; bhava, sharva, rudra, pashupati, ugra, sahamahAn, bhiima, and Ishaana; the 'Vedas' aslo discuss individually about these names. (29)

हे महादेव! आपके जो आठ अभिधान (नाम) - भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महादेव, भीम, ईशान - हैं, उनमें से प्रत्येक नाम का वेदमन्त्र भी वर्णन करते हैं और वेदानुगामी पुराण इन नामों में विचरते ही हैं, अर्थात् वेद-पुराण सभी उन आठों नामों का अतिशय प्रतिपादन करते हैं। अतः परम प्रिय एवं प्रत्यक्ष तेजयक्त समस्त जगत् के आश्रय आपको मैं साष्टांग प्रणाम करता हूँ।।29।।

वपुप्रादुर्भावात् अनुमितम् इदं जन्मनि पुरा
पुरारे! नैवाहं क्वचित् अपि भवन्तम् प्रणतवान्।
नमन् मुक्तः संप्रति अतनुः अहम् अग्रे अप्यनतिमान्
महेश! क्षन्तव्यं तत् इदम् अपराध द्वयम् अपि।।30।।

हे त्रिपुरारि! मनुष्य शरीर धारण करने से मुझे यह अन्दाजा (अनुमान) हो गया है कि मैंनें पिछले जन्मों में कभी भी आपको प्रणाम नहीं किया। यदि ऐसा किया होता तो मैं मुक्त हो गया होता और इस बार मेरा कोई शरीर नहीं होता, किनतु ऐसा नहीं हुआ। इस जन्म में मैंने आपको अब प्रणाम किया है जिसका फल यह होगा कि मैं मुक्त हो जाऊंगा और पुनः शरीर धारण नहीं करुंगा। ऐसी अवस्था में आने वाले समय में भी मैं आपको प्रणाम नहीं कर सकूंगा।

हे महेश! कृपया मेरे यह दोनों अपराध (पिछले जन्मों में और भविष्य के समय में भी आपको प्रणाम न करने के) क्षमा कीजिए ।।30।।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव! दविष्ठाय च नमः
नमः क्षेदिष्ठाय स्मर हर! महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन! यविष्ठाय च नमः
नमः सर्वस्मै त तत् इदम् इति सर्वाय च नमः।।31।।

O, destroyer of Cupid! the three-eyed one! Saluations to you, who is the forest-lover, the nearest and the farthest; the minutest and the biggest, the oldest and the youngest; salutations to you who is everything and beyonf everything. (31)

हे अतिनिकटवर्ती और एकान्त (निर्जन) के प्रेमी! आपको प्रणाम है, अति

दूरवर्ती! आपको प्रणाम है । हे कामारि। अति लघु, (सूक्ष्मरुपधारी)! आपको प्रणाम है। हे अति महान!। आपको प्रणाम है। हे त्रिनेत्र! वृद्धतम्! आपको नमस्कार है, अत्यन्त युवक! आपको प्रणाम है। सर्वस्वरुप! आपको नमस्कार है, परोक्ष, प्रत्यक्ष पदसे परे अनिर्वचनीय! आपको नमस्कार ।।31।।

बहुल रजसे विश्व उत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबल तमसे तत् संहारे हराय नमोनमः।
जनसुख कृते सत्व उद्रिक्तौ मृडाय नमोनमः
प्रमहसि पदे निःत्रे गुण्ये शिवाय नमो नमः।।32।।

Salutations to you in the name of 'Bhava' in as mush as you can createe the world by taking the 'rajas' as the dominant quality; saluatios to you in the name of 'Hara' in as much as you destroy the world by taking the 'tamas' as the dominant quality; salutations to you in the nae of 'NRiDa' in as much as you maintain and protect the world by taking 'satva' as the dominant quality. Again salutations to you in the name of Shiva in as much as you are beyond the above-mentioned three qualities and are the seat of the supreme bliss. (32)

विश्व की सृष्टि के लिये रजोगुणकी अधिकता धारण करनेवाले ब्रह्मा रुपधारी! (आपको बारम्बार नमस्कार है। विश्व के संहारके लिये तमोणुणकी अधिकता धारण करने वाले हर (रुद्र) रुपधारी! आपको बारम्बार नमस्कार है। समस्त जीवो के सुख (पालन) के लिये सत्त्वगुण की अधिकता धारण करने वाले विष्णु रुपधारी! आपको बारम्बार नमस्कार है। स्वयं प्रकाश मोक्षके लिये त्रिगुणातीत, समस्त द्वैतसे रहित मंगलमय अद्वैत! (आप) शिवको बार-बार नमस्कार है ।।32।।

श्री पुष्पदन्त मुखं पंकज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विष हरेण हर प्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूपतिः महेशः

This hymn which is dear to Shiva, has emerged out out of the lotus-like mouth of Pushhpadanta and is capable of emoving all sins. may the lord of all beings beoe greatly pleased with anyone who has learnt this by heart and / or reads or recalls his with single-mindedness!

कशमीरी पद्धति के अनुसार यहां यह पाठ सम्पूर्ण होता है
अब इसकी महिमा का गाण करते है।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्य क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमा उल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितम् अमन्दी कृत्य मां भक्तिः आधात्
वरद! चरणयोःते वाक्य पुष्पोपहारम् ।।1।।

O, boon-giver, I was very perplexed to sing your praise considering my little awarness and afflicted mind vis-a-vis your ever increasing limitless quality; however, my devotion to you made me set aside this difficulties and place these floral lines at your feet. (1)

असित गिरि समं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे
सुर तरु वर शाखा लेखनी पत्रम् उर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं
तत् अपि तव गुणानाम् ईश! पारं न याति ।।2 ।।

O, great master! Even, if one were to assume that the blue mountain, the ocean, the heavenly tree and the earth are the ink, the ink-pot, the pen ans th epaper respectively and the foddess of learning (Saraswati) herself is greatness, however long she were to write! (2)

असुर सुर मुनि इन्द्रैः अर्चितस्य इन्दु मौलेः
ग्रथित गुण महिम्नः निर्गुणस्य ईश्वरस्य ।
सकल गण वरिष्ठः पुष्पदन्त अभिधानः
रुचिरम् अलघुवृत्तैः स्तोत्रम् एतत् चकार ।।3 ।।

The best one among all groups (Gandharva?). Pushhpadanta by name, composed this charming hymn in none too short metres, in praise of the great lord who wears the moon in his head (Shiva), who is worshipped and glorified by all demons, gods and sages and who is beyond all attributes and forms. (3)

अहः अहः अनवद्यं धूर्जटिः स्तोत्रम् एतत्
पठति परमं भक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिव लोके रुद्र तुल्यः तथा–अत्र
प्रचुर तर धन–आयुः पुत्रवान् कीर्तिमान् च ।।4 ।।

Whoever reads this faultless hymn of Shiva daily, with pure mind and great devotion, ultimately reaches Shiva's domain and become equal to him, in this world, he is endowed with children, great wealth, long life and fame (4)

महेशात् न अपरः देवः महिम्नः न अपरा स्तुतिः
अधोरात् न अपरः मंत्रः न अस्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।।5 ।।

There is no God higher than Mahesha; there in o hymn better than this one. There is no 'mantra' greater than 'OM' and there is no truth or principal beyond one's teacher/spritual guide. (5)

दीक्षा दानं तपः तीर्थ ज्ञानं याग् आदिकाः क्रियाः ।।
महिम्नः तव पाठस्य कलां न अर्हन्ति षोडशीम् ।।6 ।।

Initiation (into spritual development), charity, penance pilgrimage, spritual knowledge and religious acts like sacrifices are not capable of yielding even one-sixteenth of the return that will resuly from the reading of this hymn. (6)

कुसुम दशन नामा सर्व गन्धर्व राजः
शिशु शशि धर मौलेः देव देवस्य दासः।
स खलु निज महिम्नः भ्रष्ट एव अस्य रोषात्
स्तवनम् इदम् अकार्षीत् दिव्य दिव्यं महिम्नः ।।7।।

Kusumadanta (equivalent of Pushhpadanta) was the king of all Gandharavs and he was a devotee of the Lord of lords, Shiva, who wears the baby moon (with a few digits only) in his head. He fell from his glorious position due to Shiva's wrath at his misconduct. It was then that the Gandharva eomposed this hymn which is the most divine. (7)

सुर वर मुनि पूज्यं स्वर्ग मोक्ष एक हेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्रांजलिः न अन्य चेताः ।
व्रजति शिव समीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवन्नम् इदम् अमोघं पुष्पदन्त प्रणीतम।।8।।

If an aspirant for heaven and liberation, worships Shiva, the teacher of gods, at first and then reads this unfailing hymn, composed by Pushhpadantta, with folded hands and single-mindedness, he attains Shiva's bode, being praised by 'kinnaras' (as group of emi-gods known for their singning talent). (8)

आसमाप्तम् इदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्व भाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि सर्वम् ईश्वर वर्णनम् ।।9।।

Here ends this Meritorious, charming and incomparapable hymn, uttered by the Gandhavra, all in description of the great master. (9)

इति एषा वाड्.मयी पूजा श्रीमन् शंकर पादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां में सदा शिवः ।।10।।

Thus, this worship in the form of words, is dedicated at the feet of Shri Shankara; may the ever-auspicious lord of the gods be pleased with this (10).

यह शब्दमयी पूजा श्रीमान् शंकर चंरणों में समर्पित है। इससे सदाशिव मुझपर प्रसन्न हों ।।42।।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशः असि महेश्वर।
यादृशः असि महादेव तादृशाय नमो नमः।।11।।

I do not know the truth of your nature and how you are. O, great God! My Salutatons are to that an nature of yours of which you really are (11)

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ।।12।।

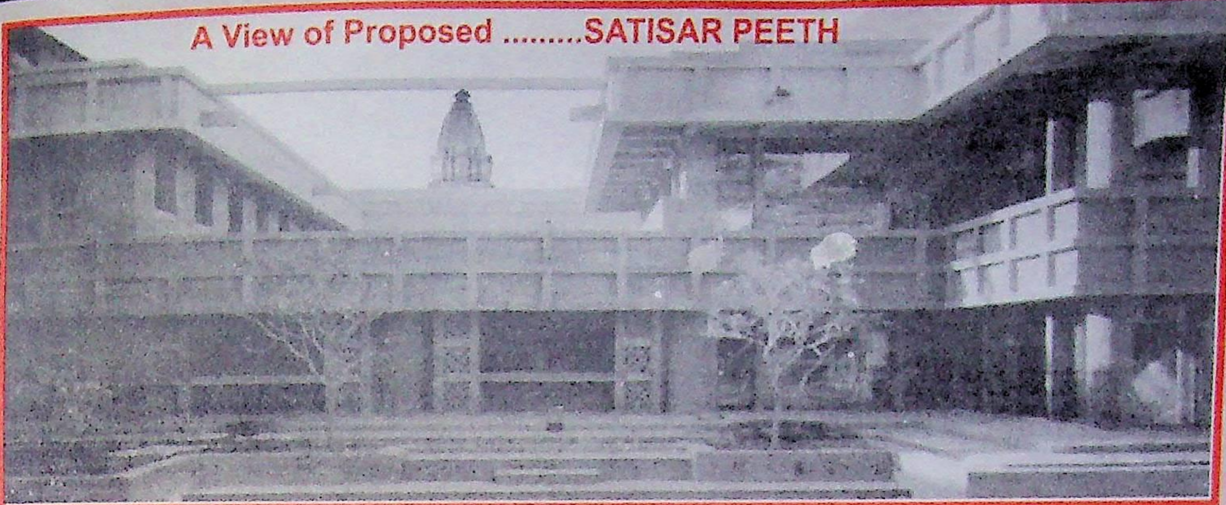
Whoever reads this ince3, twice or thrice (in a day) revels in the domain of Shiva, bereft of all sins. (12)

There is no binding upon the timing of recitation of Mahmnapaar. One can recite this in morning, evening and mid times.

जो मनुष्य शिवमहिम्नः स्तोत्रका पाठ एक समय, दोनों समय या तीनों समय करेगा, वह समस्त पापोंसे छुटकारा पाकर शिवलोक पूजित होगा ।।44।।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ।।13।।

We have been greatly helped by the work previously done by Sh. Jai Lal Raina & Sh. B. L. Koul. Our sincere thanks to them.



SATISAR SPEAKS................

Festivals of spirituality

Kashmiri Pandits have from times immemorial been observing several festivals. Especially festivals during winter had a great spiritual importance and flavour and had significant relevance not only from the point of view of entertainment but also from the point of view of inner sublimation ultimately leading of salvation and self realisation. Unfortunately for a long time especially after mass migration out of Kashmir, we forgot about some very important festivals. This may partially be due to mental agony and distress inflicted on our psyche due to Displacement but broadly analyzing, the community has been passing through a Religious inertia and gradually it is going too far away from its traditions and roots. While we are ignoring some of our important festivals which bestowed our lives in Kashmir, we have strangely adopted several alien festivals unknown to Kashmiri Pandits. Taking up new festivities at the cost of our own special occasions does not augur very well for the community. While Satisar Foundation is not opposed to taking up newer methods of spiritual advancement yet we firmly believe that it cannot be at the cost of our special days especially the month of Magha or Maghamas which is considered so sacred for varying reasons. Despite biting cold, both men and women in Kashmir used to celebrate some important dates of Magha with great devotion and fervour. The intention behind circulation of this prized document syllabus among the Kashmiri Pandits is not only to tell them the importance of some of the important days but also to imbibe in them a sense of celebration and possession. we intensely expect that all Kashmiri Pandits benefit from the sterneous efforts of research wing of Satisar Foundation by knowing the rationale of various important days of the Magha and carry forward their socio-spiritual journeys ahead and pass it on to next generations too and let us not forget that the memories of past coupled with celebrating our important festivals as usual should bring our hopes restoration of our mother land the land of our ancestors. Tatha Astoo.

Magha the eleventh month of our calendar and month of festivals is holiest. This month has Shivchaturdashi celebrated on Ekadhshi, Dwadashi and Tryodashi. On these fasting days, an unusual festivity was witnessed in our homes. This was followed by Magha Amawasya or Moni Amawasya a festival dedicated to self perseverance through maintenance of silence. This is followed by Gouri Tritya when the Kul guru would visit our homes to bestow blessings of Saraswati Ma on our children and newly wed bride when he would bring photo inscribed with a sholoka at the bottom. This was followed by Tripura Chaturthi day of birthday of Goddess of education (Ma Saraswati). Next two days are those of Basant Panchmi and Kumar Shashti. Surya Saptami was celebrated as birthday of sun God while Beeshamastami coincided with the greatness of Bhisham pita & the penances of Bhimsen synonymous with god of power. Those who can not fast on every Ekadashi through out the year, can fast on this day. Finally, Makar Sankranti which we love to call Shishir Sankranti is best for Pitra Kriya, The whole month of Magha as such remains auspicious, Satisar wishes all its readers , members and Community at large a spiritually filled Magha mas ahead.

Satisar Foundation
(M) 9419192733

Social Code

1. PRESERVE AND PROMOTE OUR LANGUAGE;
- By conversing in Kashmiri with our children and encouraging them to learn, speak and interact in Kashmiri.
- By interacting and speaking with out fellow community brethren in Kashmiri.

2. PROTECT OUR IDENTITY;
- By imbibing a sense of pride in our unique social, cultural and spiritual tradition.
- By maintaining our age-old social marital order and promoting and encouraging marriages within the fold.

3. UPHOLD OUR TRADITIONS;
- By following the indigenous scientific Lunar calender in observing rituals, festivals, special occasions etc.
- By celebrating birthday's, rituals, religious occasions and unique Kashmiri Pandit festivals.

4. STRENGTHEN OUR BROTHERHOOD;
- By expanding our social circle and
- By caring for each other; Mutual care is the only ray of hope for our Survival in Exile.

5. STRENGTHEN SOCIO-CULTURAL INSTITUTIONS;
- Physically, intellectually and financially, as these are the pillars of our Identity.

OUR FREE PUBLICATIONS



धर्म : स्वरूपं राष्ट्रस्य, बलं ज्ञानं च भूषणम्।
तन्निघ्नता कि न हतं, रक्षता किं न रक्षितम्।।

भावार्थः- राष्ट्र का स्वरूप उसका धर्म ही है। बल और ज्ञान (विवेक) उसका भूषण है। इन्हें नष्ट करने वालो ने देश का क्या नहीं बिगाड़ा है?और इन्हें सुरक्षित रखने वालो ने देश का क्या सुरक्षित नहीं रखा है। अर्थात इन सांस्कृतिक आधारों की अवहेलना करने से राष्ट्र की हानि होती है और इनके पालन से राष्ट्र की सुरक्षा होती है।

SATISAR FOUNDATION
Post Box 118, Head Post Office Rani Talab, Jammu, J&K
Correspondence:-
C/o 32-E, Shankar Vihar, Talab Tillo, Jammu – 180002 (J&K)
OR
C/o:- 181 – A, Sector – 2, Pamposh Colony, Janipur,
Jammu – 180007 (J&K)
E-mail : satisar2000@yahoo.com
Visit us at : www.satisar.org
Tel.: 0191-2593948, 9419113414, 9419117251, 9906182398, 9469132249, 9419307613, 9469493100

High-Tech Printers, Janipur, Jammu 9419131650, 9906256577